गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 292
दि. 23.02.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

किश्तवाड़ में सुरक्षाबलों का निर्णायक प्रहार, जैश के तीन आतंकी ढेर, कमांडर सैफुल्ला के मारे जाने की आशंका

जीएनएस)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में सुरक्षाबलों ने आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ी और महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। जिले के चतरू बेल्ट के पासेरकुट इलाके में रविवार को हुई भीषण मुठभेड़ में प्रतिबंधित आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के तीन आतंकवादियों को मार गिराया गया। यह कार्रवाई सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि मारे गए आतंकियों में संगठन का कुख्यात कमांडर सैफुल्ला भी शामिल हो सकता है, जो पिछले कई वर्षों से इस क्षेत्र में सक्रिय था और कई बड़े हमलों की साजिश रच चुका था।

अधिकारियों के अनुसार, मुठभेड़ के बाद घटनास्थल से आतंकियों के शव बरामद किए गए, जो आग की वजह से बुरी तरह झुलस चुके थे। फिलहाल उनकी पहचान की प्रक्रिया जारी है और सुरक्षा एजेंसियां डीएनए जांच और अन्य तकनीकी तरीकों के माध्यम से उनकी पुष्टि करने में जुटी हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मारे गए आतंकियों में शामिल सैफुल्ला पिछले करीब पांच वर्षों से किश्तवाड़ और आसपास के पहाड़ी क्षेत्रों में सक्रिय था और उसने सुरक्षाबलों पर कई हमलों की योजना बनाई थी। विशेष रूप से जुलाई 2024 में हुए उस हमले में उसका नाम सामने आया था, जिसमें एक कैप्टन समेत चार जवान शहीद हुए थे।

यह पूरा अभियान खुफिया एजेंसियों से मिले विश्वसनीय इनपुट के आधार पर शुरू किया गया था। सेना की व्हाइट नाइट कोर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी देते हुए बताया कि किश्तवाड़ क्षेत्र में 'त्राशी-आई' नाम से एक संयुक्त ऑपरेशन चलाया गया। इस अभियान में सेना की काउंटर-

इंटेलिजेंस फोर्स (सीआईएफ)-डेल्टा, जम्मू और कश्मीर पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने मिलकर समन्वित कार्रवाई की। इस संयुक्त अभियान का उद्देश्य क्षेत्र में छिपे आतंकियों को घेरकर उन्हें निष्क्रिय करना था।

रविवार पूर्वाह्न लगभग 11 बजे सुरक्षाबलों ने पासेरकुट के दुर्गम और घने वन क्षेत्र में आतंकियों की मौजूदगी की पुष्टि की। सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर सर्च ऑपरेशन शुरू किया। जैसे ही जवान संदिग्ध स्थान के पास पहुंचे, आतंकियों ने एक कच्चे मकान से अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए आतंकियों को चारों ओर से घेर लिया। दोनों पक्षों के बीच काफी देर तक भीषण गोलीबारी होती रही, जिससे पूरे क्षेत्र में तनाव का माहौल बन गया।

मुठभेड़ के दौरान गोलीबारी और विस्फोटों की वजह से उस कच्चे मकान में आग लग गई, जिसमें आतंकी छिपे हुए थे। आग तेजी से फैल गई और मकान पूरी तरह जलकर खाक हो गया। जब आग पर काबू पाया गया, तब सुरक्षाबलों ने मौके से तीन आतंकियों के शव बरामद किए। इसके साथ ही घटनास्थल से दो एके-47 राइफल, भारी मात्रा में गोला-बारूद और अन्य संदिग्ध सामग्री भी बरामद की गई। यह बरामदगी इस बात का स्पष्ट संकेत है कि आतंकी किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की तैयारी में थे।

सेना की उत्तरी कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा ने इस सफल अभियान के लिए सुरक्षाबलों की सराहना की। उन्होंने जवानों की त्वरित और सटीक कार्रवाई को आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि इस तरह के अभियानों से आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है और क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। सेना ने स्पष्ट किया कि जम्मू-कश्मीर को आतंकवाद मुक्त बनाने के लिए इस तरह के अभियान आगे भी जारी रहेंगे।

किश्तवाड़ का चतरू वन क्षेत्र लंबे समय से आतंकियों की गतिविधियों के लिए संवेदनशील माना जाता रहा है। घने जंगल, दुर्गम पहाड़ियां और सीमित मानव आबादी के कारण यह क्षेत्र आतंकियों के लिए छिपने का सुरक्षित स्थान बन जाता है। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, 18 जनवरी से अब तक इस क्षेत्र में लगभग छह मुठभेड़ हो चुकी हैं, जो यह दर्शाता है कि आतंकवादी संगठन इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, सुरक्षाबलों की सतर्कता और निरंतर अभियान के कारण आतंकियों की योजनाएं बार-बार विफल हो रही हैं। इस वर्ष जम्मू क्षेत्र में अलग-अलग अभियानों के दौरान अब तक जैश-ए-मोहम्मद के कुल सात आतंकवादियों को मार गिराया जा चुका है। इससे पहले उधमपुर और कठुआ जिलों में भी सुरक्षाबलों ने सफल अभियान चलाकर कई आतंकियों को निष्क्रिय किया था। यह आंकड़ा इस बात का प्रमाण है कि सुरक्षा एजेंसियां आतंकवाद के खिलाफ अपनी रणनीति को प्रभावी ढंग से लागू कर रही हैं और आतंकियों को किसी भी प्रकार की गतिविधि के लिए अवसर नहीं दे रही हैं।

इस बीच, सुरक्षा एजेंसियों ने सांबा जिले में एक ट्रक चालक को संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर हिरासत में लिया है। अधिकारियों के अनुसार, उस व्यक्ति के कुछ संदिग्ध संपर्कों की जानकारी मिली थी, जिसके बाद उसे पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया। सुरक्षा एजेंसियां इस मामले की गहन जांच कर रही हैं ताकि आतंकियों के नेटवर्क और उनके सहयोगियों का पता लगाया जा सके।

यह सफलता न केवल सुरक्षाबलों की रणनीतिक क्षमता और साहस का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि सुरक्षा एजेंसियां आतंकवाद के खिलाफ पूरी सतर्कता और दृढ़ता के साथ काम कर रही हैं। इस अभियान से आतंकवादी संगठनों को एक स्पष्ट संदेश गया है कि भारत की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत है और किसी भी आतंकी गतिविधि को सफल नहीं होने दिया जाएगा। स्थानीय लोगों ने भी सुरक्षाबलों की इस कार्रवाई की सराहना की है और क्षेत्र में शांति बनाए रखने के प्रयासों का समर्थन किया है।

फागोत्सव 2026: सूरत में राजस्थान की संस्कृति, परंपरा और एकता का भव्य उत्सव

जीएनएस)। सूरत शहर एक बार फिर राजस्थान की समृद्ध संस्कृति, रंगों और परंपराओं का साक्षी बनने जा रहा है, जब राजस्थान युवा संघ, सूरत द्वारा तीन दिवसीय सांस्कृतिक महासंगम 'फागोत्सव 2026' का आयोजन 28 फरवरी से 2 मार्च तक गोडादरा स्थित तुलसी पार्टी प्लॉट में किया जाएगा। यह आयोजन केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज की एकता, परंपरा और सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने का एक सशक्त माध्यम है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी फागोत्सव को लेकर समाज में विशेष उत्साह और उमंग का वातावरण बना हुआ है, क्योंकि यह आयोजन समाज के लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ने और नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से परिचित कराने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

फागोत्सव की शुरुआत से पहले पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार डांडा रोपण और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजनों, पदाधिकारियों और समाजबंधुओं की उपस्थिति ने पूरे वातावरण को भक्तिमय और आध्यात्मिक बना दिया। वैदिक मंत्रों की गूंज और पारंपरिक पूजा ने यह संदेश दिया कि यह आयोजन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिकता,

संस्कृति और परंपरा के समन्वय का प्रतीक भी है। इस पूजा के माध्यम से आयोजन की सफलता और समाज की समृद्धि की कामना की गई, जो भारतीय संस्कृति की मूल भावना को दर्शाती है।

राजस्थान युवा संघ, सूरत की स्थापना वर्ष 1992 में समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने और उसे आगे बढ़ाने के उद्देश्य से की गई थी। तब से लेकर आज तक संघ निरंतर समाज के उत्थान और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए कार्य कर रहा है। फागोत्सव इस संघ की सबसे प्रमुख और पहचान बनाने वाली गतिविधियों में से एक है, जो हर वर्ष समाज के लोगों को एक मंच पर एकत्रित करता है। यह आयोजन समाज के सभी वर्गों और आयु समूहों को जोड़ने का कार्य करता है, जिससे सामाजिक समरसता और एकता को मजबूती मिलती है।

फागोत्सव का सबसे आकर्षक पहलू राजस्थान और गुजरात की सांस्कृतिक परंपराओं का संगम है। इस आयोजन में राजस्थान का प्रसिद्ध लोकनृत्य घूमर, कालबेलिया, भवई, चरी, कच्छी घोड़ी और वीणा नृत्य जैसी प्रस्तुतियां दी जाएंगी, जो दर्शकों को राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि से रूबरू कराएंगी। साथ ही गुजरात का पारंपरिक गरबा भी इस आयोजन का हिस्सा होगा, जो दोनों राज्यों की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनेगा। यह संगम न केवल मनोरंजन प्रदान करेगा, बल्कि यह दर्शाएगा कि भारत की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

आयोजकों के अनुसार, इस तीन दिवसीय आयोजन में प्रतिदिन 8 से 10 हजार लोगों के शामिल होने की संभावना है, जो इस कार्यक्रम की लोकप्रियता और महत्व को दर्शाता है। इतने बड़े स्तर पर लोगों की भागीदारी यह साबित करती है कि समाज अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति कितना जागरूक और समर्पित है। यह आयोजन समाज के लोगों के लिए केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक उत्सव है, जिसमें वे अपने परिवार और मित्रों के साथ शामिल होकर आनंद और गर्व का अनुभव करते हैं।

फागोत्सव 2026 में विभिन्न विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति भी आयोजन की गरिमा को बढ़ाएगी। 28 फरवरी को सेवानिवृत्त आईआरएस अधिकारी और समाजसेवी अशोकसिंह, 1 मार्च को समाजसेवी भरतभाई शाह और 2 मार्च को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत सह संपर्क प्रमुख नंदकिशोर द्वारा दीप प्रज्वलन किया जाएगा। दीप प्रज्वलन भारतीय परंपरा में ज्ञान, सकारात्मकता और शुभारंभ का प्रतीक माना जाता है, और इसके साथ ही प्रतिदिन शाम 7:30 बजे कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ होगा।

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज की नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना भी है। आधुनिक जीवनशैली और तकनीकी विकास के कारण युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है। ऐसे में फागोत्सव जैसे आयोजन उन्हें अपनी परंपराओं को समझने और अपनाने का अवसर प्रदान करते हैं। जब युवा पारंपरिक वेशभूषा पहनकर लोकनृत्य में भाग लेते हैं और अपनी संस्कृति का अनुभव करते हैं, तो उनमें अपनी पहचान और विरासत के प्रति गर्व की भावना विकसित होती है।

मार-ए-लागो की कड़ी सुरक्षा में सेंध की कोशिश नाकाम, संदिग्ध युवक मुठभेड़ में मारा गया

जीएनएस)। अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य में स्थित पूर्व राष्ट्रपति के निजी आवास और चर्चित रिसॉर्ट परिसर के बाहर रविवार तड़के एक गंभीर सुरक्षा उल्लंघन की घटना सामने आई, जिसने एक बार फिर वीआईपी सुरक्षा व्यवस्थाओं पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस छेड़ दी है। जानकारी के अनुसार, डोनाल्ड ट्रंप के प्रसिद्ध मार-ए-लागो रिसॉर्ट के नॉर्थ गेट पर एक 20 वर्षीय युवक ने घुसपैठ की कोशिश की, जिसके बाद सुरक्षा एजेंसियों की कार्रवाई में उसकी मौत हो गई। घटना की जांच अब संघीय और स्थानीय एजेंसियां संयुक्त रूप से कर रही हैं।

यह घटना स्थानीय समयानुसार सुबह करीब 1:30 बजे हुई, जब सुरक्षाकर्मियों ने संदिग्ध गतिविधि देखी। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार, युवक मार-ए-लागो परिसर के सुरक्षा घेरे को पार करने की कोशिश कर रहा था। उसके पास एक शॉटगन और एक फ्यूल कैन बरामद किया गया, जिससे आशंका जताई जा रही है कि वह संभावित हमले या आगजनी की योजना के साथ वहां पहुंचा था। मार-ए-लागो, जिसे अक्सर ट्रंप का "विंटर व्हाइट हाउस" कहा जाता है, अत्यंत संवेदनशील और उच्च सुरक्षा वाला क्षेत्र माना

जाता है। ऐसे में इस प्रकार की घटना ने सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क कर दिया है।

घटना के दौरान तैनात यूएस सीक्रेट सर्विस के एजेंटों ने संदिग्ध को रोकने का प्रयास किया। अधिकारियों के अनुसार, जब युवक को चेतावनी दी गई, तो स्थिति तेजी से तनावपूर्ण हो गई और गोलीबारी की नौबत आ गई। जवाबी कार्रवाई में सीक्रेट सर्विस के एजेंटों के साथ पाम बीच काउंटी शेरिफ ऑफिस के एक डिप्टी ने भी फायरिंग की। गोली लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया और बाद में उसकी मृत्यु हो गई। राहत की बात यह रही कि इस घटना में कोई सुरक्षा अधिकारी घायल नहीं हुआ।

घटना के समय डोनाल्ड ट्रंप परिसर में मौजूद नहीं थे। सुरक्षा एजेंसियों ने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रपति या उनके परिवार को किसी प्रकार का खतरा नहीं हुआ। हालांकि, यह घटना इस बात का संकेत है कि उच्च सुरक्षा क्षेत्रों में भी संभावित खतरे पूरी तरह समाप्त नहीं होते और सतत निगरानी एवं त्वरित प्रतिक्रिया अत्यंत आवश्यक है।

मामले की जांच अब एफबीआई, सीक्रेट सर्विस और स्थानीय पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से की जा रही है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि युवक की मंशा क्या थी, क्या वह अकेले कार्य कर रहा था या किसी बड़े षड्यंत्र का हिस्सा था। इसके अतिरिक्त, यह भी जांच का विषय है कि सुरक्षा बलों द्वारा की गई कार्रवाई परिस्थितियों के अनुरूप और प्रोटोकॉल के तहत थी या नहीं। अधिकारियों का कहना है कि सभी पहलुओं की गहनता से जांच की जाएगी और आवश्यक तथ्यों के सामने आने के बाद ही विस्तृत जानकारी सार्वजनिक की जाएगी।

मार-ए-लागो परिसर अमेरिका की राजनीतिक और सुरक्षा दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। यहां समय-समय पर उच्च स्तरीय बैठकों और कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है। इसलिए इसकी सुरक्षा व्यवस्था बहुस्तरीय और अत्यंत सख्त रखी जाती है। ताजा घटना को सुरक्षा एजेंसियां गंभीरता से ले रही हैं और पूरे इलाके की घेराबंदी कर अतिरिक्त बल तैनात कर दिया गया है। आसपास के क्षेत्रों में निगरानी बढ़ा दी गई है और प्रवेश-निकास बिंदुओं पर सघन जांच की जा रही है।

यह पहली बार नहीं है जब ट्रंप से जुड़े किसी स्थल पर सुरक्षा संबंधी खतरे की सूचना सामने आई हो। सितंबर 2024 में वेस्ट पाम बीच स्थित ट्रंप इंटरनेशनल गोल्फ क्लब में कथित हत्या की साजिश के मामले में आरोपी रयान रूथ को अदालत द्वारा उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी। उस घटना के बाद भी सुरक्षा व्यवस्था को और कड़ा किया गया था। ताजा घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि उच्च प्रोफाइल व्यक्तियों और स्थलों की सुरक्षा निरंतर चुनौती बनी रहती है।

रंगों के उत्सव ने जगाई आर्थिक समृद्धि की नई उम्मीद, होली पर 80 हजार करोड़ से अधिक व्यापार का अनुमान

जीएनएस)। भारत में त्योहार केवल परंपरा और आस्था का प्रतीक नहीं होते, बल्कि वे देश की आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति प्रदान करते हैं। रंगों का पावन पर्व होली इस वर्ष व्यापारियों और उद्यमियों के लिए विशेष उत्साह और आशा लेकर आया है। कन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के अनुसार इस वर्ष होली के अवसर पर देशभर में 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होने की संभावना व्यक्त की गई है, जो पिछले वर्ष के लगभग 60 हजार करोड़ रुपये की तुलना में करीब 25 प्रतिशत अधिक है। यह अनुमान केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि देश की बढ़ती आर्थिक सक्रियता, उपभोक्ता विश्वास और स्वदेशी उत्पादों की बढ़ती लोकप्रियता का सशक्त प्रमाण है। इस संबंध में कन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल और गुजरात के चेयरमैन प्रमोद भगत ने बताया कि इस बार बाजारों में ग्राहकों की अभूतपूर्व भीड़ देखी जा रही है और स्वदेशी उत्पादों की मांग उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है।

होली के अवसर पर बाजारों में रंग, गुलाल, पिचकारी, परिधान और मिठाइयों की चमक हर ओर दिखाई दे रही है। दुकानों पर ग्राहकों की बढ़ती संख्या इस बात का संकेत है कि लोगों में उत्सव के प्रति उत्साह पहले से कहीं अधिक है। विशेष रूप से स्वदेशी उत्पादों की मांग में तेजी ने छोटे व्यापारियों, कुटीर उद्योगों और स्थानीय निर्माताओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। यह बदलाव अचानक नहीं आया है, बल्कि इसके पीछे देश में स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए चलाए जा रहे अभियान और उपभोक्ताओं की बदलती सोच का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए "वोकल फॉर लोकल" अभियान का प्रभाव अब स्पष्ट रूप से बाजारों में दिखाई दे रहा है। इस अभियान ने

लोगों में स्वदेशी उत्पादों के प्रति विश्वास और गर्व की भावना को मजबूत किया है, जिससे भारतीय निर्माताओं को नई ऊर्जा और पहचान मिली है।

कुछ वर्ष पहले तक होली के बाजारों में विदेशी, विशेष रूप से चीनी उत्पादों का दबदबा था, लेकिन अब स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। भारतीय निर्मित हर्बल गुलाल, प्राकृतिक रंग, पारंपरिक पिचकारियां, गुब्बारे और पूजा सामग्री ने बाजारों में प्रमुख स्थान बना लिया है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और पर्यावरण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। हर्बल और प्राकृतिक रंगों के उपयोग से त्वचा और पर्यावरण को नुकसान कम होता है, जिससे लोग अधिक सुरक्षित और जागरूक विकल्पों को प्राथमिकता दे रहे हैं। इस बदलाव ने देश के लाखों छोटे निर्माताओं और कारीगरों को रोजगार और आय के नए अवसर प्रदान किए हैं।

होली से संबंधित व्यापार केवल रंग और पिचकारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव कई अन्य क्षेत्रों पर भी दिखाई देता है। मिठाइयों, विशेष रूप से पारंपरिक गुजिया की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। मिठाई की दुकानों पर ग्राहकों की लंबी कतारें यह दर्शाती हैं कि लोग इस त्योहार को पूरे उत्साह और पारंपरिक तरीके से मनाना चाहते हैं। इसके अलावा ड्राई फ्रूट्स, गिफ्ट आइटम, फूल-फल, कपड़े, फर्निशिंग फैब्रिक, किराना और एफएमसीजी उत्पादों की बिक्री में भी तेजी आई है। उपभोक्ता ड्यूरेबल्स जैसे छोटे घरेलू उपकरणों की खरीदारी में भी वृद्धि देखी जा रही है, क्योंकि त्योहार के अवसर पर लोग अपने घरों को नया रूप देने और जीवनशैली को बेहतर बनाने के लिए खरीदारी करते हैं।

परिधान बाजार में भी होली का विशेष प्रभाव देखा जा रहा है। सफेद टी-शर्ट, कुर्ता-पायजामा, सलवार-सूट और पारंपरिक वस्त्रों की मांग में तेजी आई है। विशेष रूप से "हैप्पी होली" लिखी टी-शर्ट और आकर्षक डिजाइन वाले परिधान युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। यह न केवल फैशन का हिस्सा बन गया है, बल्कि त्योहार की भावना को व्यक्त करने का माध्यम भी है। वस्त्र उद्योग के लिए यह अवसर विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इससे उत्पादन और रोजगार दोनों में वृद्धि होती है।

देश की राजधानी दिल्ली में अकेले लगभग 15 हजार करोड़ रुपये के व्यापार का अनुमान लगाया गया है, जो इस त्योहार की व्यापक आर्थिक क्षमता को दर्शाता है। दिल्ली के थोक और खुदरा बाजार रंग-बिरंगे गुलाल, आकर्षक पिचकारियों और पारंपरिक मिठाइयों से सजे हुए हैं। दुकानों पर उमड़ती भीड़ यह संकेत देती है कि उपभोक्ताओं का विश्वास मजबूत हुआ है और वे उत्सव को पूरे उत्साह के साथ मनाने के लिए तैयार हैं। यह व्यापार केवल बड़े व्यापारियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि छोटे दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी वालों और स्थानीय विक्रेताओं को भी इसका लाभ मिलता है। होली मिलन समारोहों का आयोजन भी इस व्यापारिक गतिविधि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देशभर में हजारों सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संगठनों द्वारा होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन आयोजनों के कारण बैंक्वेट हॉल, होटल, रेस्टोरेंट, फार्महाउस और सार्वजनिक स्थलों की मांग में वृद्धि हुई है। इससे सेवा क्षेत्र को भी विशेष लाभ मिल रहा है। केटरिंग, सजावट, संगीत और आयोजन से जुड़े व्यवसायों को अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है, जिससे आर्थिक गतिविधियों का दायरा और व्यापक हो गया है।

इस वर्ष लोगों में हर्बल और प्राकृतिक रंगों के प्रति विशेष आकर्षण देखा जा रहा है। यह प्रवृत्ति पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता का संकेत है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए सुरक्षित और प्राकृतिक उत्पादों को प्राथमिकता दे रहे हैं, जबकि बच्चों में लोकप्रिय पात्रों वाली पिचकारियां विशेष आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। यह बाजार की बदलती मांग और उपभोक्ता प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत है।

त्योहारों का आर्थिक महत्व केवल तत्काल व्यापार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह दीर्घकालिक आर्थिक विकास में भी योगदान देता है। त्योहारों के दौरान बढ़ी हुई मांग उत्पादन को बढ़ावा देती है, जिससे उद्योगों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

चूड़ियों की खनक और तलवार की टंकार: शक्ति, प्रेम और प्रतिरोध की अनसुनी भाषा

खनक की अपनी एक अलग दुनिया होती है। यह केवल ध्वनि नहीं, बल्कि एक संकेत होती है—भावनाओं का, शक्ति का और अस्तित्व का। जब खनक तलवार से आती है, तो उसमें युद्ध का आह्वान होता है, साहस की चुनौती होती है और वीरता का गर्व होता है। और जब यही खनक चूड़ियों से आती है, तो उसमें प्रेम की मधुरता, सौंदर्य की कोमलता और जीवन की लय होती है। लेकिन यह समझना जरूरी है कि खनक केवल धातु की टकराहट नहीं, बल्कि उस वस्तु के पीछे छिपे अर्थ का प्रतिबिंब होती है। तलवार की खनक भय पैदा कर सकती है, लेकिन चूड़ियों की खनक दिल में भावनाएं जगा सकती है। यही कारण है कि दोनों की खनक अलग-अलग रस उत्पन्न करती है—एक वीर-रस और दूसरा शृंगार-रस। तलवार का इतिहास रक्त और रणभूमि से जुड़ा रहा है। उसकी खनक हमेशा संघर्ष और वर्चस्व की कहानी कहती रही है। तलवार का अस्तित्व ही युद्ध के लिए बना है। वह सुरक्षा का साधन भी है और आक्रमण का उपकरण भी। उसकी चमक और उसकी खनक दोनों ही शक्ति के प्रतीक रहे हैं। लेकिन चूड़ियों की खनक का अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। चूड़ियां केवल आभूषण नहीं हैं, बल्कि वे जीवन की निरंतरता, स्त्री की पहचान और उसके भावनात्मक संसार की प्रतीक हैं। जब किसी स्त्री के हाथों में चूड़ियां खनकती हैं, तो वह केवल एक ध्वनि नहीं होती, बल्कि उसमें जीवन की गति, प्रेम की उपस्थिति और घर की जीवंतता का संकेत होता है।

चूड़ियों का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि वे केवल कोमलता का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे शक्ति का भी प्रतीक हो सकती हैं। जब किसी को चूड़ियां भेंट की जाती हैं, तो उसका अर्थ केवल सौंदर्य नहीं होता, बल्कि वह एक संदेश भी होता है। कई बार चूड़ियां भेंट करना किसी की कायरता पर प्रश्नचिह्न लगाने का माध्यम बन जाता है। यह एक सांकेतिक चुनौती होती है, जिसमें शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। यह चूड़ियों की खनक ही होती है, जो सामने वाले को अपनी शक्ति और साहस को साबित करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार चूड़ियां केवल प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि प्रतिरोध का माध्यम भी बन सकती हैं। यह विरोधाभास ही चूड़ियों की सबसे बड़ी विशेषता है। तलवार केवल एक ही अर्थ में उपयोग की जा सकती है—युद्ध और आक्रमण के लिए। लेकिन चूड़ियां कई अर्थों में उपयोग की जा सकती हैं। वे प्रेम की भाषा भी हो सकती हैं और विरोध की आवाज भी। वे स्नेह का संकेत भी हो सकती हैं और चुनौती का प्रतीक भी। यही कारण है कि चूड़ियों की खनक तलवार की टंकार से कहीं अधिक गहरी और व्यापक होती है। तलवार शरीर को घायल कर सकती है, लेकिन चूड़ियां आत्मा को झकझोर सकती हैं।

भारतीय संस्कृति में चूड़ियों का विशेष महत्व रहा है। वे केवल सौंदर्य का आभूषण नहीं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक पहचान का हिस्सा हैं। विवाह के बाद चूड़ियां स्त्री के जीवन में एक नए अध्याय का संकेत देती हैं। उनकी खनक घर में जीवन की उपस्थिति का प्रमाण होती है। यह खनक केवल एक स्त्री की उपस्थिति नहीं, बल्कि एक पूरे संसार की उपस्थिति का संकेत होती है—एक परिवार का, एक संबंध का और एक भावनात्मक बंधन का। लेकिन यही चूड़ियां जब टूटती हैं, तो उनकी खनक एक अलग अर्थ ले लेती है। टूटी हुई चूड़ियों की आवाज शोक का प्रतीक बन जाती है। यह खनक नहीं, बल्कि एक मौन पीड़ा होती है। यह उस रिक्तता का संकेत होती है, जो किसी प्रिय के चले जाने के बाद रह जाती है। इस प्रकार चूड़ियां जीवन के हर भाव—प्रेम, खुशी, चुनौती और दुख—की साक्षी होती हैं। समय के साथ चूड़ियों का प्रतीकात्मक अर्थ और भी व्यापक हो गया है। वे अब केवल व्यक्तिगत भावनाओं का प्रतीक नहीं रहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संकेतों का माध्यम भी बन गई हैं। जब चूड़ियों का उपयोग किसी को चुनौती देने या विरोध व्यक्त करने के लिए किया जाता है, तो वह एक सांकेतिक प्रतिरोध बन जाता है। यह प्रतिरोध बिना हिंसा के भी उतना ही प्रभावशाली हो सकता है, जितना किसी तलवार का आक्रमण। यह चूड़ियों की खनक ही होती है, जो बिना रक्त बहाए भी व्यवस्था को झकझोर सकती है। महान शायर Kaifi Azmi ने स्त्री की शक्ति और उसकी संभावनाओं को पहचानते हुए उसे अपने आंचल को परचम बनाने का आह्वान किया था। यह आह्वान केवल

न्याय की भाषा और भाषा का न्याय

"न्याय केवल एक आदेश पत्र नहीं है, बल्कि पीड़ित के मन में उपजी वह संतुष्टि है जो उसे यह विश्वास दिलाती है कि उसकी बात सुनी गई। जिस दिन एक आम भारतीय अपनी अदालत के फैसले को स्वयं पढ़कर गौरव महसूस करेगा, उसी दिन हम भारत के लोग का संवैधानिक वादा पूरा होगा।

किसी भी जीवंत लोकतंत्र की सफलता नागरिकों और संस्थाओं के बीच अटूट संवाद पर टिकी है, लेकिन भारतीय अदालतों में यह डोर अक्सर भाषाई बाधाओं के कारण टूट जाती है। कल्पना कीजिए उस मुवक्किल की, जिसके जीवन का फैसला उसकी अपनी भाषा में नहीं हो रहा। हाल ही में न्याय की देवी की आंखों से प्रतीकात्मक पट्टी तो हटा दी गई ताकि यह संदेश जाए कि न्याय सबको देखता है, लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं हुआ। आज भी जब अदालत की कार्यवाही मुवक्किल के लिए 'विदेशी' भाषा में होती है तो लगता है कि आंखों की पट्टी अब 'भाषाई पट्टी' में बदल गई है। निष्पक्षता का नया प्रतीक आज भी आम नागरिक 'बौद्धिक रूप से बहिष्कृत' करने वाले औपनिवेशिक भाषाई औजार के सामने बेबस है। इस विडंबना का सबसे मार्मिक दृश्य तब उभरता है जब जीवन भर की कानूनी लड़ाई लड़ने वाला व्यक्ति फैसले के बाद अपने ही वकील से पूछता है–'साहब, मैं जीता या हारा?' यह सवाल उस व्यवस्था पर मूक प्रहार है जहां न्याय तो होता है, पर वह पीड़ित की समझ से कोसों दूर रहता है। लोकतंत्र की असली परिपक्वता तभी सिद्ध होगी जब न्याय की भाषा और पीड़ित की भाषा का यह फासला खत्म होगा और कानून वास्तव में 'जनता की भाषा' में संवाद करेगा। भारत में उच्च न्यायपालिका की भाषा मुख्य रूप से अंग्रेजी है, जो लॉर्ड मैकाले की उसी शिक्षा नीति की विरासत है, जिसका लक्ष्य भारतीयों को उनकी जड़ों से काटना था। आज 'आजादी के अमृत काल' में भी अनुच्छेद 348(1)(क) के कारण सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी में ही होती है। यह विडंबना है कि जिस देश की 90 प्रतिशत आबादी अंग्रेजी नहीं जानती, वहां के सबसे बड़े अदालती फैसले उसी भाषा में दिए जाते हैं।

अदालतों में मुवक्किल की स्थिति उस मूकदर्शक जैसी होती है जो अपनी ही कहानी को किसी और की जुबानी, एक अनजान भाषा में सुन रहा है। वह वकील की दलीलों पर केवल गर्दन हिलाता है, उन्हें समझता नहीं। 'भाषा का न्याय' तब खंडित होता है जब एक ग्रामीण किसान को यह समझने के लिए अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है कि फैसला उसके हक में है या खिलाफ। यह अनुच्छेद 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) का सूक्ष्म उल्लंघन है, क्योंकि 'न्याय तक पहुंच' में उसे 'समझना' भी शामिल है।

न्याय की भाषा केवल अंग्रेजी होने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह पुराने लैटिन शब्दों के भारी बोझ से भी दबी हुई है। उत्प्रेषण, पूर्व न्याय और दूसरे पक्ष को भी सुनो जैसी कानूनी शब्दावलियां एक आम नागरिक के लिए किसी अबूझ पहेली या जादू-टोने के मंत्र जैसी प्रतीत होती हैं। समय-समय पर न्यायपालिका में इस पर बहस हुई है। 'मधु लिमये बनाम वेदानंद शर्मा (1970)' के मामले में जब मधु लिमये ने हिंदी में बहस की अनुमति मांगी, तो उसे खारिज कर दिया गया। इसके विपरीत, यदि हम वैश्विक परिदृश्य देखें, तो फ्रांस में फ्रांसीसी, जर्मनी में जर्मन, जापान में जापानी और चीन में मंदारिन का प्रयोग होता है। वहां कानून को 'आम आदमी की समझ' से बाहर की चीज नहीं माना जाता। भारत में तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी हमें वैश्विक व्यवस्था से जोड़ती है, लेकिन क्या यह तर्क उस गरीब की संतुष्टि से बड़ा है जिसे अपनी हार या जीत का कारण ही समझ नहीं आता?

डिजिटल युग में 'सुवास' (सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर) जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल का विकास भाषाई दीवार को गिराने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो अदालती फैसलों को क्षेत्रीय भाषाओं में सुलभ बना रहा है। हालांकि, अनुवाद कभी भी अभिव्यक्ति का पूर्ण विकल्प नहीं हो सकता क्योंकि इसमें अक्सर कानूनी बारीकियां और संवेदनाएं खो जाती हैं। वास्तविक न्याय तब होगा जब हम 'अनुवादित न्याय' से आगे बढ़कर 'मौलिक भाषाई न्याय' की ओर बढ़ेंगे, जहां फैसले अनुवाद के भरोसे न रहकर सीधे पीड़ित की मातृभाषा में लिखे जाएं। आज भारत में भी एक सशक्त 'सरल भाषा आंदोलन' की नितांत आवश्यकता है, ताकि कानून की पेचीदगियों को 10वीं कक्षा का एक सामान्य छात्र भी आसानी से समझ सके। इस दिशा में कुछ ठोस और व्यावहारिक कदम उठाने होंगे, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद 348(2) का विस्तार करना है ताकि उच्च न्यायालयों में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को वास्तविक बढ़ावा मिल सके।

आधुनिक दौर में तकनीक का लाभ उठाते हुए एक 'द्विभाषी व्यवस्था' विकसित की जानी चाहिए, जहां अदालती कार्यवाही की लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान स्थानीय भाषाओं में सबटाइटल उपलब्ध हों। इसके साथ ही, विधि शिक्षा के पाठ्यक्रम में सुधार करना अनिवार्य है ताकि भविष्य के वकील अपनी मिट्टी की बोली और संवेदनाओं से जुड़े रहें। प्रत्येक न्यायिक फैसले के अंत में एक 'सरल सारांश' जोड़ने की परंपरा शुरू होनी चाहिए, जो भारी-भरकम कानूनी शब्दावलियों से मुक्त हो और आम नागरिक को यह स्पष्ट कर सके कि वास्तव में फैसला क्या हुआ है।

न्याय केवल एक आदेश पत्र नहीं है, बल्कि पीड़ित के मन में उपजी वह संतुष्टि है जो उसे यह विश्वास दिलाती है कि उसकी बात सुनी गई। जिस दिन एक आम भारतीय अपनी अदालत के फैसले को स्वयं पढ़कर गौरव महसूस करेगा, उसी दिन हम भारत के लोग का संवैधानिक वादा पूरा होगा।

प्रेरणा

जब एक ज़ेबरा मरता है, तब केवल एक जानवर नहीं, हमारी व्यवस्था की आत्मा भी घायल होती है

सर्दी का मौसम हमेशा से दो तरह की कहानियां लेकर आता है। एक कहानी वह होती है, जो आग के पास बैठकर सुनाई जाती है—जिसमें ऊष्मा, अपनापन और जीवन की सहजता होती है। दूसरी कहानी वह होती है, जो ठंड के बीच चुपचाप घटती है—जिसमें ठिठुरन, असहायता और एक ऐसी खामोशी होती है, जिसे कोई सुनना नहीं चाहता। उस वर्ष की सर्दी भी ऐसी ही थी। तापमान गिरकर तीन डिग्री तक पहुंच गया था, और यह ठंड केवल मौसम में ही नहीं, बल्कि उन व्यवस्थाओं में भी उतर गई थी, जिन्हें जीवित प्राणियों की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था। दिल्ली का चिड़ियाघर उस सुबह हमेशा की तरह खुला था। लोग आए, बच्चों ने खुशी से उछलते हुए जानवरों को देखा, कैमरे चमके और जीवन चलता रहा। लेकिन इस सामान्यता के पीछे एक असामान्य घटना घट चुकी थी। एक ज़ेबरा, जिसकी काली-सफेद धारियां प्रकृति की सबसे सुंदर रचनाओं में गिनी जाती हैं, अब इस दुनिया में नहीं था। वह अपने बाड़े में निर्जीव पड़ा था, जैसे उसकी धारियों की सारी जीवंतता अचानक कहीं खो गई हो। ज़ेबरा केवल एक जानवर नहीं होता। वह गति का प्रतीक होता है, स्वतंत्रता का प्रतीक होता है। अफ्रीका की खुली धरती पर दौड़ते हुए ज़ेबरा को देखकर यह महसूस होता है कि प्रकृति ने उसे केवल जीने के लिए नहीं, बल्कि जीने का उत्सव मनाने के लिए बनाया है। लेकिन चिड़ियाघर में वही ज़ेबरा सीमाओं में बंध जाता है। उसकी गति पर नियंत्रण होता है, उसकी दिशा तय होती है और उसका जीवन एक निर्धारित दायरे में सिमट जाता है।

यह ज़ेबरा भी उसी सीमित दुनिया का हिस्सा था। उसके पूर्वज कभी अफ्रीका से होते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचे थे और फिर वहां से उसे भारत लाया गया था। वह केवल एक जीव नहीं था, बल्कि देशों के बीच मित्रता का प्रतीक भी था। उसकी उपस्थिति चिड़ियाघर की शान मानी जाती थी। लोग उसे देखने आते थे, उसकी तस्वीरें लेते थे और उसके अस्तित्व को एक दुर्लभ उपलब्धि के रूप में देखते थे। लेकिन उस रात कुछ ऐसा हुआ, जिसने इस प्रतीक को एक त्रासदी में बदल दिया। ठंड असहनीय थी। चिड़ियाघर के दूसरे हिस्से में एक हथिनी थी, जो दक्षिण भारत की गर्म जलवायु की आदी थी। उसके लिए यह ठंड केवल असुविधा नहीं, बल्कि एक यातना थी। वह बेचैन हो उठी। उसकी बेचैनी इतनी बढ़ गई कि उसने अपनी जंजीरों को तोड़ दिया और अंधेरे में भटकते हुए उस क्षेत्र में पहुंच गई, जहां ज़ेबरा रहता था। यह एक ऐसा क्षण था, जहां दो अलग-अलग दुनियाओं के जीव आमने-सामने थे। एक, जो शक्ति और आकार में विशाल था, और दूसरा, जो गति और सजगता में अद्वितीय था। लेकिन उस रात, दोनों ही अपने स्वाभाविक संतुलन से बाहर थे। ज़ेबरा भयभीत हो गया। उसने भागने की कोशिश की। लेकिन चिड़ियाघर की सीमाएं जंगल की तरह खुली नहीं होतीं। वहां हर दिशा में दीवारें होती हैं, हर रास्ता सीमित होता है। उसी सीमितता में उसकी गति उसके खिलाफ चली गई। वह दीवार से टकरा गया, और यह टकराव उसकी अंतिम टकराहट साबित हुआ। सुबह जब कर्मचारी आए, तो उन्होंने केवल एक मृत शरीर नहीं देखा। उन्होंने एक ऐसी घटना देखी, जिसने कई सवाल खड़े कर दिए थे। यह सवाल केवल एक जानवर की मृत्यु का नहीं था, बल्कि उस व्यवस्था का था, जो उसकी रक्षा के लिए बनाई गई थी।

अखबारों ने इस घटना को प्रमुखता से छापा। अचानक वह ज़ेबरा, जो कल तक केवल एक प्रदर्शनी का हिस्सा था, राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन गया। उसकी मृत्यु पर दुख व्यक्त किया गया, उसकी महत्ता पर लेख लिखे गए और उसकी अनुपस्थिति को एक बड़ी क्षति बताया गया। एक जांच आयोग का गठन किया गया। आयोग ने केवल उस रात की घटनाओं की जांच नहीं की, बल्कि उस ज़ेबरा के पूरे इतिहास को समझने की कोशिश की। उसने एम्स्टर्डम और नीदरलैंड के संग्रहालयों में जाकर उस प्रजाति के बारे में जानकारी एकत्र की। वैज्ञानिकों से बात की गई, रिपोर्टें तैयार की गईं और निष्कर्ष निकाला गया कि यह एक दुर्घटना थी।

लेकिन दुर्घटनाएं कभी अकेले नहीं होतीं। वे हमेशा किसी न किसी लापरवाही, किसी न किसी कमजोरी और किसी न किसी असंतुलन का परिणाम होती हैं। इस दुर्घटना के पीछे भी कई परतें थीं। ठंड एक कारण थी, लेकिन ठंड तो हर साल आती है। असली कारण वह तैयारी थी, जो नहीं की गई थी। वह सतर्कता थी, जो नहीं दिखाई गई थी। वह जिम्मेदारी थी, जो निभाई नहीं गई थी।

अंततः दोष एक महावत पर डाला गया। कहा गया कि अगर वह जाग रहा होता, अगर वह सतर्क होता, तो यह घटना टाली जा सकती थी। लेकिन यह निष्कर्ष जितना सरल दिखता था, उतना था नहीं। महावत भी इंसान था। वह भी उसी ठंड में था, उसी थकान में था और उसी व्यवस्था का हिस्सा था, जिसने इस त्रासदी को जन्म दिया था।

यह कहानी केवल एक ज़ेबरा की नहीं है। यह कहानी उस मानसिकता की है, जिसमें हम जीवित चीजों की उपेक्षा करते हैं और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें महत्व देते हैं। जब ज़ेबरा जीवित था, तब वह केवल एक आकर्षण था। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद वह एक प्रतीक बन गया।

यह विडंबना हमारे समाज में हर जगह दिखाई देती है। हम अक्सर जिम्मेदारी से बचते हैं और दोष किसी एक व्यक्ति पर डाल देते हैं। हम समस्याओं को समझने के बजाय उनके लिए आसान समाधान खोजते हैं। हम संवेदनाओं की बात करते हैं, लेकिन उन्हें अपने व्यवहार में नहीं उतारते।

चिड़ियाघर केवल जानवरों का स्थान नहीं होता। वह हमारी सोच का प्रतिबिंब होता है। वहां की हर घटना हमें यह याद दिलाती है कि व्यवस्था केवल नियमों और संरचनाओं से नहीं चलती। वह संवेदनशीलता और जिम्मेदारी से चलती है।

उस ज़ेबरा की मृत्यु हमें यह सिखाती है कि जीवन की रक्षा केवल दीवारों और पिंजरों से नहीं की जा सकती। उसके लिए जागरूकता चाहिए, सतर्कता चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण—संवेदनशीलता चाहिए। क्योंकि जब संवेदनाएं ठंडी हो जाती हैं, तब सबसे मजबूत दीवारें भी कमजोर हो जाती हैं।

और अंततः, जब एक ज़ेबरा मरता है, तब केवल एक जानवर नहीं मरता। उसके साथ हमारी जिम्मेदारी का एक हिस्सा मरता है, हमारी संवेदनशीलता का एक हिस्सा मरता है और हमारी व्यवस्था की आत्मा पर एक ऐसा घाव बन जाता है, जिसे कोई जांच आयोग, कोई रिपोर्ट और कोई स्पष्टीकरण पूरी तरह भर नहीं सकता।

अवसर के साथ चुनौती भी है एआई, भारत से दुनिया को उम्मीद

दिल्ली में संपन्न एआई इंपैक्ट समिट ने जिस तरह दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया, उससे इस सम्मेलन की महत्ता रेखांकित होती है। एआई पर अब तक हुए तीन वैश्विक सम्मेलनों की तुलना में इस सम्मेलन में जिस तरह एआई कंपनियों के दिग्गजों, शासनाध्यक्षों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों के साथ अन्य लोगों की कहीं अधिक भागीदारी रही, उससे भी यह सम्मेलन उपयोगी सिद्ध हुआ। इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने अपने इस संबोधन से एआई तकनीक के उपयोग को लेकर एक नई दिशा देने की कोशिश की कि एआई को मशीन से मानव केंद्रित बनाने के साथ उसे जवाबदेह, सुरक्षित, लोकतांत्रिक और समावेशी रूप देना होगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने एआई को लेकर भारत की प्राथमिकता रेखांकित करने के साथ ही विश्व समुदाय को एक विजन भी दिया, जिसे उन्होंने एमएएनएवी यानी "मानव" की संज्ञा दी। उन्होंने इसे परिभाषित करते हुए बताया कि एम यानी मारल एंड एथिकल, ए यानी एकाउंटेबल, एन यानी नेशनल सावरनिटी, ए अर्थात एक्सेसिबल एंड इंक्लूसिव और वी यानी वैलिड एंड लेजिटिमेट। इसका आशय है कि एआई नैतिक, जवाबदेह होने के साथ, जिसका डाटा उसके अधिकार को सुनिश्चित करने के साथ ही सबकी पहुंच में हो और वैध एवं प्रामाणिक भी हो।

चूंकि भारत एआई में भविष्य देख रहा है, इसलिए भारत सरकार एआई पर निवेश को प्रोत्साहित कर रही है और इस कोशिश में है कि दुनिया भर की एआई कंपनियां भारत के साथ मिलकर काम करें। इस एआई सम्मेलन ने स्पष्ट किया कि भारत की तकनीकी क्षमता से दिग्गज एआई कंपनियां प्रभावित हैं। उन्हें भारत अपने लिए एक बड़ा बाजार भी दिख रहा है और मानव संसाधनों का स्रोत भी। अमेरिका के बाद चैटजीपीटी के सबसे अधिक उपभोक्ता भारत में हैं। इसे छात्रों से लेकर उद्योग जगत के लोग इस्तेमाल कर रहे हैं। भारत में चैटजीपीटी के साथ अन्य एआई टूल के उपयोगकर्ता तेजी से बढ़ रहे हैं। इसका एक कारण यह भी है कि सरकार भी एआई टूल्स के उपयोग को बढ़ावा दे रही है। उसकी कोशिश है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग जगत के साथ शासन-प्रशासन और अन्य अनेक क्षेत्रों में भी एआई का इस्तेमाल हो।

यह अच्छा है कि भारत एआई की महत्ता को समझ रहा है। इस बजट में घोषणा की गई है कि सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सेवा क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा के लिए एक समिति गठन करेगी। इसके अलावा बजट में वित्त मंत्री ने 'भारत विस्तार' नाम से एक नई पहल का एलान किया, जो किसानों के लिए एआई आधारित बहुभाषी सिस्टम होगा। बजट से पहले पेश आर्थिक समीक्षा में भी एआई को एक आर्थिक रणनीति के रूप में देखा गया। यह स्पष्ट है कि जैसे इंटरनेट के उपयोग में भारत अग्रणी देशों में है, वैसे ही शीघ्र ही एआई के इस्तेमाल में भी आगे होगा, लेकिन यह ध्यान रहे कि अधिकांश एआई कंपनियां अमेरिकी हैं और वे भारत में वर्चस्व बढ़ा रही हैं। इस कारण यह सवाल उभर रहा है कि ये अमेरिकी कंपनियां भारतीय डाटा का उपयोग करके अपने एआई माड्यूल को सुदृढ़ करने के क्रम में अपने आर्थिक लाभ में भारत को हिस्सेदार बनाएंगी या नहीं और यदि बनाएंगी तो किस तरह? क्या भारतीयों का डाटा भारत में रहेगा और वह उसके अधिकार क्षेत्र में होगा?

इस समय विश्व भर में जैसी तेजी के साथ एआई कंपनियों में निवेश हो रहा है, वैसी तेजी किसी अन्य सेक्टर में नहीं दिख रही। कुछ विशेषज्ञों की मानें तो एआई कंपनियां अपने एकाधिकार को बढ़ा रही हैं। इसी एकाधिकार के कारण उनके स्टाक बढ़ते जा रहे हैं और उनमें निवेश भी बढ़ रहा है। अमेरिकी कंपनियों की कुछ हद तक काट चीन की एआई कंपनियां कर रही हैं, पर अभी उनका वैसा दबदबा नहीं, जैसा गूगल, ओपनएआई, मेटा आदि का है। फिलहाल एआई तकनीक के विकास में यूरोप के साथ विश्व के अन्य देश पीछे नजर आ रहे हैं। भारत एआई क्षेत्र की तीसरी सबसे बड़ी ताकत बनने की तैयारी कर रहा है, लेकिन बात तब बनेगी, जब भारतीय एआई कंपनियां अमेरिकी कंपनियों के समकक्ष खड़ी हो सकें। उन्हें अमेरिकी कंपनियों पर निर्भरता से बचना होगा और अपनी अलग पहचान बनानी होगी।

एआई सम्मेलन के दौरान जिस तरह एक निजी यूनिवर्सिटी ने चीनी एआई उपकरण को अपनी खोज बताकर पेश किया, उससे भारत असहज हुआ। भारत सरकार को सुनिश्चित करना होगा कि एआई तकनीक के विकास के नाम पर विदेशी एआई टूल की नकल न होने पाए। हम विदेशी तकनीक और उपकरणों की नकल करके आगे नहीं बढ़ सकते। इसे उद्योग जगत को भी समझना होगा और शिक्षा संस्थानों को भी। भारत में युवा एआई का उपयोग तो कर रहे हैं, लेकिन वे इससे अनजान से हैं कि यह तकनीक कैसे काम करती है? इसी तरह बहुत से लोग नहीं जानते कि इसके दुरुपयोग से कैसे बचा जा सकता है? अभी छात्रों को एआई के बारे में सही ज्ञान देने की भी कोई ठोस व्यवस्था नहीं बन सकी है। साफ है कि एआई के पठन-पाठन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। सरकार के साथ उद्योग जगत को इसके प्रति भी सावधान रहना होगा कि ऐसी स्थिति न आने पाए कि एआई आधारित नई नौकरियां सृजित होने के पहले परंपरागत नौकरियों पर कोई बड़ा संकट आ जाए।

एआई सम्मेलन में भारत ने एआई के दुरुपयोग को रोकने पर खासा जोर दिया, जिससे अन्य देशों ने सहमति जताई और इसका प्रमाण वह घोषणापत्र है, जिसमें 86 देशों ने हस्ताक्षर किए, लेकिन एआई का दुरुपयोग रोकने की अभी कोई ठोस व्यवस्था नहीं बन सकी है। अभी यह भी नहीं कहा जा सकता कि जिस घोषणापत्र पर 86 देशों ने सहमति जताई, उस पर सही तरह अमल हो सकेगा।

अभियान

अघोर की अग्नि में तपता सत्य: श्मशान से शून्य तक की आध्यात्मिक यात्रा

अघोरी साधुओं की दुनिया सदियों से रहस्य, भय, आकर्षण और जिज्ञासा का विषय रही है। सामान्य व्यक्ति के मन में अघोरी की छवि बनते ही एक विचित्र दृश्य उभरता है—राख से लिपटा शरीर, जटाओं से घिरा चेहरा, हाथ में मानव खोपड़ी, और श्मशान की निस्तब्धता में बैठा एक साधक। यह दृश्य हमारी सामाजिक धारणाओं से इतना अलग है कि पहली प्रतिक्रिया अक्सर भय की होती है। परंतु यदि इस बाहरी रूप के पीछे छिपे दर्शन को समझा जाए, तो स्पष्ट होता है कि अघोर केवल एक साधु परंपरा नहीं, बल्कि अस्तित्व को देखने का एक विलक्षण दृष्टिकोण है। यह वह मार्ग है जो जीवन और मृत्यु के बीच खड़ी दीवार को तोड़ देता है, जो पवित्र और अपवित्र के भेद को समाप्त कर देता है, और जो मनुष्य को उसके सबसे मूल स्वरूप से परिचित कराता है।

अघोरी शब्द संस्कृत के "अघोर" से बना है। "घोर" का अर्थ है भयानक या डरावना, और "अघोर" का अर्थ हुआ—जो घोर नहीं है, जो सरल है, जो सहज है। यही इस परंपरा का मूल है। जिस वस्तु या स्थिति को समाज भयावह मानता है, अघोरी उसी में सहजता खोजता है। वह मानता है कि सृष्टि में कुछ भी अपवित्र नहीं है, क्योंकि हर कण में शिव का अंश है। यदि ईश्वर सर्वव्यापक है, तो वह केवल मंदिरों में ही नहीं, श्मशान में भी है; वह केवल पुष्पों की सुगंध में ही नहीं, भस्म की गंध में भी है।

अघोर मार्ग का आधार शिव परंपरा से जुड़ा है। भगवान शिव को अघोर का आदर्श माना जाता है। शिव का स्वरूप ही इस दर्शन का जीवंत प्रतीक है—वह भस्म रमाए रहते हैं, श्मशान में विचरते हैं, गले में सर्प धारण करते हैं और संसार की परंपरागत मर्यादाओं से परे स्थित दिखाई देते हैं। शिव के पाँच प्रमुख रूपों में "अघोर" एक विशेष रूप है, जो भय के पार स्थित शांति का प्रतिनिधित्व करता है। शिव को आदियोगी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने योग और ध्यान की वह परंपरा स्थापित की, जो आत्मा को परम चेतना से जोड़ती है। अघोरी साधु स्वयं को शिव का अनुगामी मानते हैं और उसी निर्भीक मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं। अघोरी साधुओं की साधना का सबसे प्रमुख स्थान श्मशान होता है। श्मशान वह स्थल है जहाँ जीवन की समस्त अस्थिरता नग्न रूप में सामने आती है। वहाँ राजा और भिखारी, ज्ञानी और अज्ञानी, सभी एक ही अग्नि में समाहित हो जाते हैं। सामाजिक पद, प्रतिष्ठा, धन और अहंकार—सब राख में बदल जाते हैं। अघोरी इस सत्य को अपने जीवन का केंद्र बना लेते हैं। वे श्मशान की राख को अपने शरीर पर धारण करते हैं, क्योंकि वह उन्हें नश्वरता का बोध कराती है। भस्म उन्हें स्मरण कराती है कि यह शरीर क्षणभंगुर है और वास्तविक सत्ता आत्मा की है। अघोरी बनने की प्रक्रिया अत्यंत कठोर और अनुशासित होती है। यह कोई सनक या क्षणिक आवेग का परिणाम नहीं है। एक साधक को दीक्षा लेने से पूर्व लंबे समय तक गुरु की सेवा करनी पड़ती है। परंपरा के अनुसार कम से कम बारह वर्षों तक गुरु के मार्गदर्शन में रहकर साधना करनी होती है। इस अवधि में साधक को अपने परिवार, मित्रों और सामाजिक पहचान से पूर्णतः विरक्त होना पड़ता है। उसे अपने भीतर छिपे भय, घृणा, मोह और अहंकार का सामना करना होता है। अघोर साधना का प्रथम चरण ही यह है कि मनुष्य अपने भीतर के द्वैत को समाप्त करे। जब तक वह किसी वस्तु को अच्छा या बुरा, पवित्र या अपवित्र मानता रहेगा, तब तक वह अघोर की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता।

अघोरी साधुओं की जीवनशैली समाज की सामान्य अपेक्षाओं के विपरीत होती है। वे प्रायः नग्न या न्यूनतम वस्त्रों में रहते हैं, भिक्षा पर निर्वाह करते हैं और साधारण जीवन जीते हैं। उनका आहार भी परंपरागत मानकों से अलग हो सकता है, क्योंकि वे यह मानते हैं कि यदि ईश्वर सर्वत्र है, तो भोजन में भी भेदभाव क्यों? वे मानव खोपड़ी, जिसे कपाल कहा जाता है, को अपने भिक्षापात्र के रूप में उपयोग करते हैं। कपाल उनके लिए केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि जीवन की अनित्यता का प्रतीक है। वे उन्हें स्मरण कराता है कि हर देह का अंतिम रूप यही है—एक अस्थि संरचना, जो कभी चेतना का आवास थी। कपाल साधना अघोरी परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस साधना में खोपड़ी को विशेष अनुष्ठानों द्वारा शुद्ध किया जाता है और उसे आध्यात्मिक उपकरण के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। इसे "कपाल मोक्ष" साधना कहा जाता है। अघोरी मानते हैं कि खोपड़ी सत्य का प्रतीक है, क्योंकि उसमें अब कोई छल, कोई वासना, कोई अहंकार नहीं बचा। वह शून्य है, और उसी शून्य में ब्रह्म का अनुभव संभव है। अघोरी साधना केवल बाहरी प्रतीकों तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक स्वरूप आंतरिक परिवर्तन में निहित है। अघोरी हठयोग, कुंडलिनी योग और ध्यान की गहन प्रक्रियाओं का अभ्यास करते हैं। उनका उद्देश्य शरीर और मन की सीमाओं को पार करना है। वे मानते हैं कि मनुष्य जन्म से अघोर होता है—निर्मल और सहज। समाज और संस्कार उसे विभाजनों में बाँट देते हैं। अघोर साधना उन कृत्रिम परतों को हटाकर मूल चेतना तक पहुँचने का प्रयास है। अघोरी साधुओं के जीवन में करुणा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि उनका बाहरी रूप कठोर प्रतीत होता है, परंतु उनका हृदय दयालु होता है। वे रोगियों की सेवा करते हैं, पीड़ितों को सहारा देते हैं और समाज के हाशिये पर खड़े लोगों के लिए कार्य करते हैं। उनकी दृष्टि में कोई ऊँच-नीच नहीं है। वे जाति, वर्ग और सामाजिक पहचान से परे मनुष्य को केवल आत्मा के रूप में देखते हैं। अघोर का अर्थ ही है—जहाँ कोई घृणा न हो। अघोरी साधना में तीन प्रमुख अवस्थाएँ मानी जाती हैं। पहली अवस्था में साधक "औघड़" कहलाता है। यह प्रारंभिक दीक्षा की अवस्था है, जहाँ वह सांसारिक बंधनों से मुक्त होना सीखता है। दूसरी अवस्था में वह पूर्ण अघोरी बनता है, जब वह अपने भीतर के भय और द्वैत को समाप्त कर लेता है। अंतिम अवस्था "परमहंस" की होती है, जहाँ साधक सिद्धियों से भी आगे निकलकर केवल शिवभाव में स्थित हो जाता है। इस अवस्था में साधक के लिए संसार और मोक्ष का भेद समाप्त हो जाता है। समाज अक्सर अघोरियों को गलत समझता है। उनके अनुष्ठानों और जीवनशैली को देखकर उन्हें अंधविश्वासी या विचित्र कह दिया जाता है। परंतु अघोरी परंपरा का मूल दर्शन अत्यंत गहरा और दार्शनिक है। यह हमें चुनौती देता है कि हम अपने पूर्वाग्रहों पर पुनर्विचार करें। क्या वास्तव में कोई वस्तु अपवित्र है, या हमारा दृष्टिकोण उसे अपवित्र बनाता है? क्या मृत्यु वास्तव में अंत है, या वह एक परिवर्तन मात्र है? अघोरी साधुओं की दुनिया हमें यह सिखाती है कि भय का सामना किए बिना मुक्ति संभव नहीं है। जिस अंधकार से हम भागते हैं, उसी में प्रकाश छिपा हो सकता है। श्मशान, जो सामान्य व्यक्ति के लिए भय का प्रतीक है, अघोरी के लिए साधना का स्थल है। वहाँ वह मृत्यु को निकट से देखता है, उसे स्वीकार करता है और उसके पार जाने का अभ्यास करता है। अंततः अघोर मार्ग कोई सामाजिक विद्रोह नहीं, बल्कि आंतरिक क्रांति है। यह मनुष्य को उसके सबसे मूल प्रश्नों से जोड़ता है—मैं कौन हूँ? यह जीवन क्या है? मृत्यु के बाद क्या है? अघोरी इन प्रश्नों का उत्तर पुस्तकों में नहीं, बल्कि अनुभव में खोजता है। वह अपने अस्तित्व को तपाकर सत्य तक पहुँचने का प्रयास करता है। अघोर की दुनिया रहस्यमयी अवश्य है, पर वह अंधविश्वास की नहीं, अनुभव की दुनिया है। वह हमें याद दिलाती है कि जब तक हम भय और घृणा से मुक्त नहीं होंगे, तब तक हम आध्यात्मिक स्वतंत्रता को नहीं पा सकते। अघोरी साधु उसी स्वतंत्रता के पथिक हैं। वे श्मशान की राख में भी ईश्वर को देखते हैं, शून्य में भी पूर्णता का अनुभव करते हैं और मृत्यु में भी जीवन की निरंतरता का बोध करते हैं। इस प्रकार अघोर केवल एक साधना पद्धति नहीं, बल्कि एक दृष्टि है—एक ऐसी दृष्टि जो जीवन को उसकी समग्रता में स्वीकार करती है। जो प्रकाश और अंधकार दोनों को समान भाव से देखती है। जो बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर है; बस हमें भय के पार जाकर उसे पहचानना है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

गुजरात में जल्द उपलब्ध होगा सर्पदंश से होने वाली मौतों को कम करने के लिए स्थानीय सांपों के जहर से बना एंटीवेनम

▸▸ गुजरात सरकार द्वारा धरमपुर में स्थापित स्नेक रिसर्च इंस्टीट्यूट ने हाल ही में सांपों के जहर की नीलामी की, जिसमें जहर की उच्च गुणवत्ता के कारण उम्मीद से अधिक दाम मिले

▸▸ सर्प अनुसंधान केंद्र गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांपों की प्रजातियों से जहर एकत्रित करके एंटीवेनम तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करता है

▸▸ भारत सर्पदंश से होने वाली मौतों को रोकने के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना लॉन्च करने वाला दुनिया का पहला देश

▸▸ केंद्र सरकार ने मार्च-2024 में 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' लॉन्च किया

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम करने के लिए गुजरात सरकार के पास जल्द ही राज्य में पाए जाने वाले जहरीले सांपों से ही बना एंटीवेनम उपलब्ध होगा। सर्पदंश से होने वाली मौतों को कम करने की दिशा में यह कदम काफी प्रभावी सिद्ध होगा।

उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार ने दक्षिण गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुर शहर में सर्प अनुसंधान केंद्र (स्नेक रिसर्च इंस्टीट्यूट-एसआरआई) की स्थापना की है। इस संस्थान में गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने वाले जहरीले सांपों को लाया जाता है। अभी इस संस्थान में लगभग 460 जहरीले सांपों को रखा गया है। सांपों की देखभाल और जहर निकालने की प्रक्रिया में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की गाइडलाइन का पालन किया जाता है। सांप से निकाले गए जगह को आधुनिक टेक्नोलॉजी के जरिए प्रोसेस कर पाउडर में बदला जाता है। इस पाउडर की नीलामी कर उसे लाइसेंस वाले एंटीवेनम बनाने वाले निर्माताओं को दिया जाएगा। गुजरात सरकार निर्माताओं द्वारा पाउडर से बनाए गए एंटीवेनम को खरीदेगी और राज्य के विभिन्न हॉस्पिटलों को सर्पदंश के उपचार के लिए एंटीवेनम की आपूर्ति करेगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य में सर्पदंश से होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए गहन उपाय किए जा रहे हैं और इसके लिए गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांपों से ही प्राप्त जहर से एंटीवेनम बनाने का अहम कार्य प्रगति पर है।

सर्प अनुसंधान केंद्र ने हाल ही में जहरीले सांपों के लायोफिलाइज्ड (पाउडर रूप में) की ई-नीलामी की

सर्प अनुसंधान केंद्र ने हाल ही में गुजरात में पाए जाने वाले चार प्रमुख जहरीले सांपों की प्रजातियों- इंडियन कोबरा, कॉमन क्रेट, रसेल्स वाइपर और सॉ-स्केल्ड वाइपर- के लायोफिलाइज्ड (पाउडर स्वरूप में) जहर की ई-नीलामी की। इस नीलामी में लाइसेंस वाले एंटीवेनम बनाने वाले निर्माताओं ने हिस्सा लिया। इस संस्थान में रखे और संभाले गए जहरीले सांपों से निकाले गए जहर की गुणवत्ता इतनी अच्छी थी कि इस जहर के लिए अनुमान से भी अधिक ऊंचे दाम मिले।

सर्प अनुसंधान केंद्र के एक उच्च अधिकारी ने इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए बताया, "इंडियन कोबरा के जहर के लिए प्रति ग्राम 40,000 रुपए का आधार मूल्य निर्धारित किया गया था, लेकिन हमें प्रति ग्राम 44,000 रुपए प्राप्त हुए। सॉ-स्केल्ड वाइपर के जहर के लिए प्रति ग्राम 50,000 रुपए के आधार मूल्य के मुकाबले हमें 56,500 रुपए मिले। दूसरी प्रजातियों के लिए भी बेहतर प्रतिक्रिया के साथ ऊंचे दाम मिले।"

सर्प अनुसंधान केंद्र के उपाध्यक्ष डॉ. डी.सी. पटेल ने कहा, "सर्पदंश के उपचार में मुख्य चुनौती अलग-अलग

क्षेत्र के हिसाब से सांप के जहर का बदल जाना है। कई बार दूर-सुदूर क्षेत्र से लाए गए जहर से बनाया गया एंटीवेनम कम प्रभावी सिद्ध होता है। इस समस्या के समाधान के लिए गुजरात सरकार ने सर्प अनुसंधान केंद्र की स्थापना की है और यहां गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांप की प्रजातियों से जहर एकत्रित कर एंटीवेनम तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हमें उम्मीद है कि गुजरात में पकड़े गए सांप के जहर से बने एंटीवेनम सर्पदंश के उपचार में और अधिक कारगर साबित होंगे।"

डॉ. डी.सी. पटेल एक जनरल सर्जन हैं, और सर्पदंश के उपचार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। वे धरमपुर में एक हॉस्पिटल चलाते हैं और सर्पदंश पीड़ितों का उपचार करते हैं। सर्पदंश के उपचार में उनकी सफलता की दर 98 फीसदी से अधिक है। उन्होंने पिछले 35 वर्षों के दौरान सांप के डसने के हर केस का दस्तावेजीकरण भी किया है।

डॉ. पटेल ने आगे कहा, "यहां रखे गए सांपों से प्राप्त किया गया जहर उच्च गुणवत्ता वाला है, क्योंकि हमारा संस्थान डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों का अनुसरण करता है। संस्थान द्वारा मुहैया कराए गए जहर से तैयार एंटीवेनम उपलब्ध होने से राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों में कमी आने की आशा है।"

सर्प अनुसंधान केंद्र को आगामी समय में विश्व स्तरीय संस्थान बनाने की योजना

सर्प अनुसंधान केंद्र (एसआरआई), गांधीनगर स्थित गुजरात फॉरेस्ट्री रिसर्च फाउंडेशन (जीएफआरएफ) के अधीन कार्य करता है। वहीं, जीएफआरएफ, गुजरात सरकार के वन एवं पर्यावरण विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था है। सर्प अनुसंधान केंद्र राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम करने के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण और जनजागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करता है।

सर्प अनुसंधान केंद्र को आगामी समय में विश्व स्तरीय संस्थान बनाने की योजना बनाई जा चुकी है। वलसाड जिला कलेक्टर ने इस संस्थान के स्थायी परिसर के निर्माण और उससे संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के लिए 2.25 हेक्टेयर भूमि आवंटित की है। इस संस्थान को विश्व स्तरीय केंद्र के तौर पर विकसित करने के लिए 11.68 करोड़ रुपए का प्रस्ताव गुजरात सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

देश में एंटीवेनम बनाने के लिए सांप से जहर निकालने का काम अभी तमिलनाडु स्थित इरुला स्नेक कैचर्स इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. करती है। धरमपुर स्थित सर्प अनुसंधान केंद्र अब इस कार्य को करने वाला देश का दूसरा संस्थान बन गया है।

भारत सर्पदंश एन्वेनोमिंग के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना बनाने वाला दुनिया का पहला देश

भारत सर्पदंश एन्वेनोमिंग के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना बनाने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने मार्च 2024 में 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' यानी सर्पदंश से फैलने वाले जहर की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना लॉन्च की। यह व्यापक फ्रेमवर्क राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों को अपनी कार्य योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन देता है। इसका मुख्य उद्देश्य 2030 तक सांप के डसने से होने वाली मौतों और दिव्यांगता को 50 फीसदी तक कम करना है। गुजरात का सर्प अनुसंधान केंद्र इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सर्पदंश के उपचार के लिए डॉक्टरों को प्रशिक्षण

सर्प अनुसंधान केंद्र लोगों में सर्पदंश के बारे में जागरूकता फैलाने का काम भी करता है। अब तक लगभग 300 से अधिक स्थानीय स्नेक रेस्क्यूअर्स (सांप बचावकर्मी) और 23 जिलों में 1495 से अधिक डॉक्टरों एवं मेडिकल ऑफिसरों को सर्पदंश प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। ये प्रयास, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में तत्काल प्रतिक्रिया एवं उपचार के परिणामों में सुधार लाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सर्प अनुसंधान केंद्र (धरमपुर) जागरूकता कार्यक्रम चलाता है। शिक्षकों को प्रशिक्षण देता है और स्थानीय पंचायतों के साथ मिलकर सांप से जुड़ी गलत धारणाओं को दूर करने तथा सुरक्षित तरीकों को बढ़ावा देने का काम करता है। संस्थान ने 'स्नेक्स ऑफ वलसाड' नामक फोटोग्राफिक फील्ड गाइड प्रकाशित की है और इस संदर्भ में एक वृत्तचित्र भी तैयार किया है।

इंग्लैंड के वेस्ट मिडलैंड्स के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की

▸▸ इंडिया-यूके ट्रेड डील के बाद पहली गुजरात यात्रा

▸▸ हायर एजुकेशन, ग्रीन इकोनॉमी, ईवी-स्किल डेवलपमेंट, स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा एआई-एडवांस मैन्युफैक्चरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की तत्परता दर्शाई

▸▸ सहयोग के क्षेत्रों में अधिक समन्वय के लिए गुजरात-वेस्ट मिडलैंड्स की संयुक्त कार्य समिति का गठन किया जाएगा

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया के देशों के लिए भारत एक विश्वसनीय मित्र के रूप में उभरा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को इंग्लैंड के वेस्ट मिडलैंड्स कम्बाइंड अथॉरिटी के वेस्ट मिडलैंड्स के महापौर श्री रिचर्ड पार्कर तथा उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने गांधीनगर में शिष्टाचार भेंट की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुई यूके-इंडिया ट्रेड डील के बाद यह प्रतिनिधिमंडल पहली बार गुजरात के दौरे पर आया है। इस भेंट के दौरान मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने विशेष रूप से हायर एजुकेशन, ग्रीन इकोनॉमी और ईवी, स्किल डेवलपमेंट, एआई- एडवांस मैन्युफैक्चरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की तत्परता व्यक्त की।

उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ गुजरात में 2030 में आयोजित होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए स्पोर्ट्स इकोसिस्टम और स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में यूके की विशेषज्ञता का योगदान देने के संबंध में फलदायी चर्चाएं की। इतना ही नहीं, इन गेम्स के आयोजन के संदर्भ में मुख्यमंत्री और गुजरात के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल को वेस्ट मिडलैंड्स की यात्रा पर आने का आमंत्रण भी दिया।

इस बैठक में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व के देशों के लिए भारत एक विश्वसनीय मित्र के रूप में उभरा है। गुजरात को उनके नेतृत्व का जो लाभ मिला है उसका उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि 2003 की वाइब्रेंट समिट से गुजरात ग्लोबल डेस्टिनेशन फॉर इन्वेस्टमेंट बना है और उनके मार्गदर्शन में गुजरात ने पॉलिसी ड्रिवन स्टेट के रूप में विभिन्न पॉलिसी मेकिंग से सेक्टर स्पेसिफिक ग्रोथ का विजन अपनाया है।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि विकसित भारत 2047 के प्रधानमंत्री के लक्ष्य में भी

गुजरात ग्रीन ग्रोथ सहित उभरते क्षेत्रों से नेतृत्व लेने के लिए तैयार है। यूके को सहभागीता के जिन क्षेत्रों में रुचि हो, उनमें गुजरात सरकार पूर्ण सहयोग देने के लिए उत्सुक है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने ऐसे सेक्टर्स को एक्सप्लोर करने और पारस्परिक विकास की संभावनाओं को गति देने के लिए गुजरात सरकार और वेस्ट मिडलैंड्स के अधिकारियों की एक संयुक्त कार्य समिति बनाने तथा उसके लिए संपर्क सूत्र के रूप में इंडेक्स-बी को नोडल एजेंसी नियुक्त करने का सुझाव दिया। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को वाइब्रेंट गुजरात रीजनल समिट की आगामी कड़ी तथा 2027 की वाइब्रेंट समिट में शामिल होने का आमंत्रण भी दिया।

इस उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल में वेस्ट मिडलैंड्स ग्रोथ कंपनी के सीईओ श्री नील रामी, ईओएन एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी श्री विजय टांक, यूनिवर्सिटी ऑफ वॉरविक इनोवेशन डिस्ट्रिक्ट के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ग्रेग क्लार्क, बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री डेविड, जीईडीयू ग्लोबल एजुकेशन के प्रबंध निदेशक केविन मैककॉल, एस्टन यूनिवर्सिटी के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी, यूनिवर्सिटी के उप कुलपति मार्क ली, यूकेआईएफएफ इंडिया ग्लोबल फोरम के विलियम केन तथा मनोज लाडवा शामिल रहे।

इस शिष्टाचार भेंट अवसर पर उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा इंडेक्स बी के एम.डी. श्री केयूर संपत भी उपस्थित रहे।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीनजी ने अहमदाबाद के खाड़िया स्थित विरासत (हेरिटेज) के प्रतीक देसाई की पोल में बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 131वां एपिसोड देखा

▸▸ जिस स्थान से भाजपा की नींव मजबूत होना शुरू हुई, ऐसे हेरिटेज क्षेत्र खाड़िया में उपस्थित रहकर बूथ कार्यकर्ताओं के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव यादगार और अविस्मरणीय है

- श्री नितिन नवीन जी

▸▸ पोल में उपस्थित निवासियों और कार्यकर्ताओं के परिजनों से बड़े उत्साह और उमंग के साथ मुलाकात करते श्री नितिन नवीन जी

▸▸ श्री नितिन नवीनजी ने सफाई कामगार भाई को अपना खेस पहनाकर उनके सेवा कार्य की प्रशंसा की और सम्मानित किया

▸▸ देसाई की पोल के घरों के द्वारों पर खड़े नागरिकों ने गगनभेदी जयघोष के साथ श्री नितिन नवीन जी का अभिवादन किया

▸▸ बूथ अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष एक साथ बैठकर इस तरह कार्यक्रम देखें, यह केवल भाजपा में ही संभव है

- श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा

जीएनएस)। गुजरात प्रदेश भाजपा मीडिया विभाग की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने आज अहमदाबाद के खाड़िया स्थित विरासत के उत्तम प्रतीक देसाई की पोल में भारतीय जनता पार्टी के बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदीजी के जनसंवाद कार्यक्रम 'मन की बात' का 131वां एपिसोड देखा। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री बी.एल. संतोष जी, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री रत्नाकर जी और कर्णावती महानगर भाजपा अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह उपस्थित रहे।

इस अवसर पर श्री नितिन नवीन जी ने बूथ कार्यकर्ताओं के साथ संवाद करते हुए कहा कि, आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी की भूमि पर, जहाँ भाजपा की नींव रखी गई, ऐसे हेरिटेज क्षेत्र खाड़िया में उपस्थित रहकर बूथ कार्यकर्ताओं के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव यादगार और अविस्मरणीय है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम का संवाद हमेशा प्रेरणादायी होता है। 'मन की बात' कार्यक्रम के समापन के बाद श्री नितिन नवीन जी ने पोल में उपस्थित निवासियों और कार्यकर्ताओं के परिजनों से बड़े उत्साह के साथ मुलाकात की और नागरिकों के अभिवादन को स्वीकार किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने वहां उपस्थित एक सफाई कामगार भाई को अपना खेस पहनाकर उनके सेवा कार्य की सराहना की और उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने देसाई की पोल के

घरों के दरवाजों पर उनका स्वागत करने के लिए खड़े बुजुर्गों को नमन कर उनके आशीर्वाद लिए। उपस्थित जनमेदनी ने श्री नितिन नवीन जी के इस विनम्र और सरल व्यवहार का गगनभेदी जयघोष के साथ स्वागत किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा ने कहा कि; बूथ अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष एक साथ बैठकर इस प्रकार कार्यक्रम देखें, यह केवल भारतीय जनता पार्टी में ही संभव है। आज हेरिटेज सिटी अहमदाबाद की ऐतिहासिक पोल संस्कृति के सानिध्य में बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव आनंददायी और कार्यकर्ताओं से संवाद करने का एक सुनहरा अवसर रहा।

कठाणा - वासद खंड में विशेष Rail One ऐप अभियान

जीएनएस)। वडोदरा मंडल के कामर्शियल विभाग द्वारा कठाणा – वासद खंड में RailOne ऐप के प्रचार एवं डिजिटल जागरूकता के उद्देश्य से हाल ही में एक विशेष अभियान का आयोजन किया गया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, वडोदरा मंडल श्री नरेन्द्र कुमार के निर्देशन में आयोजित इस अभियान के दौरान कठाणा से वासद स्टेशन तक यात्रा कर रहे यात्रियों से कामर्शियल विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर उन्हें RailOne ऐप डाउनलोड करने एवं पंजीकरण की प्रक्रिया संबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस अभियान के अंतर्गत इस खंड में अधिकांश यात्रियों के MST (मासिक सीजन टिकट) धारक होने तथा अनेक यात्रियों के पास कीपैड मोबाइल होने जैसी व्यावहारिक चुनौतियों के बावजूद 07 यात्रियों का सफलतापूर्वक ऐप डाउनलोड एवं पंजीकरण कराया गया। वडोदरा मंडल द्वारा डिजिटल टिकटिंग को प्रोत्साहित करने एवं यात्रियों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने के उद्देश्य से इस प्रकार के अभियान का संचालन नियमित रूप से समय-समय पर किया जाता है।

सूरत के लिंबायत जोन के इंजीनियर विपुल गणेशवाला के खिलाफ एसीबी की शिकायत के बाद भूमिगत हो गए

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

सूरत नगर निगम के लिंबायत जोन में कार्यकारी अभियंता के पद पर कार्यरत विपुल गणेशवाला और उनके साथी पत्रकार परवाना के खिलाफ एसीबी ने मामला दर्ज किया है। परवाना 4 लाख रुपये नकद लेकर फरार हो गया है और विपुल गणेशवाला भी उसके साथ ही फरार है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

सदर गणेशवाला के बारे में कहा जाता है कि विपुल गणेशवाला, जिस पर पत्रकार इस्माइल उर्फ परवाना को बिचौलिए के रूप में इस्तेमाल करके, उससे पहले सेवा दे चुकी महिला कार्यकारी अभियंता द्वारा ध्वस्त किए गए सभी अवैध ढांचों को ध्वस्त करवाने के लिए पैसे कमाने का आरोप है, पर भवन मालिकों से बड़ी रकम की उगाही करने का भी आरोप है।

एक तरफ तो शहर में अवैध इमारतों के निर्माण को लेकर तक्षशिला जैसा घोटाला चल रहा है, वहीं दूसरी तरफ इससे सबक लेने के बजाय, मनमाने ढंग से बन रही इन अवैध संपत्तियों को पत्रकारों के हाथों में सौंपकर अपने स्वार्थों को पूरा किया जा रहा है। कहा जाता है कि भ्रष्ट इंजीनियर गणेशवाला के शासनकाल में लिंबायत इलाके में करीब 40 से 50 अवैध शिक्षण भवन बनाए गए थे, जो पत्रकार परवाना और गणेशवाला की मिलीभगत से फल-फूल रहे हैं।

यह भी जानकारी मिली है कि लिंबायत, नवगाम और दिंडोली के पार्षदों की लापरवाही या डर के कारण कई लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। इतना ही नहीं, गणेशवाला ने इस महानगर के बौद्धिक माफिया की तरह करोड़ों रुपये का भ्रष्टाचार करके करोड़ों की संपत्ति और गाड़ियां हासिल कर ली हैं। इसके अलावा, गणेशवाला के बेटे की शादी पर भी डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। अगर नगर निगम के अधिकारी जागरूक और सक्रिय होते, तो गणेशवाला ऐसा करने की हिम्मत नहीं करता। यहां सवाल उठता है कि इस क्षेत्र के पार्षदों को किसका डर सता रहा था कि वे चुप रहे?

इतना ही नहीं, यह मानना भी गलत नहीं होगा कि लिंबायत इलाके में रहने वाला एक साधारण दो कमरों वाला रसोईघर का मालिक भी गणेशवाला की गतिविधियों से अच्छी तरह वाकिफ होगा। हद तो तब पार हो गई जब लिंबायत के पूर्व भाजपा पार्षद को भी निर्माण कार्य के लिए उत्पीड़न और लूट का सामना करना पड़ा और उन्हें अपनी संपत्ति बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे ज्यादा शर्मनाक और क्या हो सकता है? विश्वसनीय सूत्रों से यह भी पता चला है कि गणेशवाला ने लिंबायत में अवैध निर्माणों की जानकारी हासिल करने के लिए कई बिचौलियों को काम पर रखा है।

इस प्रकार, धन की अपनी भूख को शांत करने के लिए, गणेशवाला ने अंततः पाप का घड़ा भर दिया और कानूनी दस्तावेजों के साथ मौजूदा घरों को भी ध्वस्त करने के नोटिस जारी करके और संपत्ति मालिकों से बड़ी रकम वसूल करके उसे फाड़ डाला।

फिर बस इतना ही कहना काफी है कि एसीबी को विपुल गणेशवाला की आय, उनके बेटे की शादी पर करोड़ों रुपये के खर्च, बैंक लॉकर, नकदी और गहने, घर, वाहन आदि की गहन जांच करके एक मिसाल कायम करनी चाहिए और इस भ्रष्ट व्यक्ति को आजीवन कारावास की सजा देनी चाहिए। तभी भ्रष्टाचार का अंत होगा।

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

बिजली विभाग (पॉवर)

ई–निविदा सूचना

संख्या : EL-2025-26-45, दिनांक : 19.10.2025. मंडल रेल प्रबंधक (बिजली/पॉवर शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए ''खुली निविदा'' ई–निविदा के माध्यम से वेब–साईट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है :

ईटेंडरिंग संख्या : EL-2025-26-45, **कार्य का नाम** : Ratlam Division - Upgradation of station including circulating area, water supply and approach road at Ujjain, Laxmibai Nagar and Naikheri (Simhastha 2028), **अनुमानित लागत** : ₹ 12998068.25, **बयाना राशि**: ₹ 215000.00, **निविदा खुलने की तिथि** : 17.03.2026. विस्तृत निविदा सूचना एवं अन्य शर्ते वेब–साईट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। ADM/7/1/469

Follow us on: twitter.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

बिजली विभाग (पॉवर)

ई–निविदा सूचना

संख्या : EL-2025-26-26R, दिनांक : 20.02.2026. मंडल रेल प्रबंधक (बिजली/पॉवर शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए ''खुली निविदा'' ई–निविदा के माध्यम से वेब–साईट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है :

ई टेंडरिंग संख्या : EL-2025-26-26R, **कार्य का नाम** : Ratlam Division : Ratlam & Indore - Provision of 06 Escalators at Platform no 04 and platform no 07 of Ratlam station and 01 no. of Escalator in circulating area of PF-05/06 at Indore station. (Electrical + Civil), **अनुमानित लागत** : ₹ 74059417.39, **बयाना राशि**: ₹ 520300.00, **निविदा खुलने की तिथि** : 24.03.2026. विस्तृत निविदा सूचना एवं अन्य शर्ते वेब–साईट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। ADM/7/1/473

Follow us on: twitter.com/WesternRly

सादगी के संस्कार से सामाजिक बदलाव का संदेश: भावनगर के सामूहिक विवाह में अरविंद केजरीवाल ने दिखावे और कुरीतियों के खिलाफ उठाई आवाज

जीएनएस)। गुजरात के भावनगर में आयोजित एक भव्य सामूहिक विवाह समारोह ने समाज को एक नई दिशा और सकारात्मक संदेश देने का काम किया। यह आयोजन केवल 151 जोड़ों के विवाह का अवसर नहीं था, बल्कि यह सामाजिक एकता, सादगी और कुरीतियों के खिलाफ एक सशक्त अभियान का प्रतीक बनकर सामने आया। इस विशेष समारोह में आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया। उनके साथ पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान भी मौजूद रहे, जिन्होंने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

समारोह का आयोजन वीर मंधाता कोली समाज संगठन द्वारा किया गया था, जो पिछले 12 वर्षों से समाज के जरूरतमंद और अनाथ बेटियों के विवाह का जिम्मा उठाता आ रहा है। यह संगठन अब तक 2000 से अधिक बेटियों का विवाह सम्मानपूर्वक करवा चुका है। कुछ वर्ष पहले इस संगठन ने एक साथ 501 जोड़ों का विवाह कराकर एक मिसाल कायम की थी। यह आयोजन केवल एक सामाजिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज को आर्थिक बोझ, कर्ज और दिखावे की परंपराओं से मुक्त कराने की दिशा में एक गंभीर प्रयास है। कार्यक्रम स्थल पर चारों ओर खुशी, उत्साह और उम्मीद का वातावरण था। पारंपरिक वेशभूषा में सजे वर-वधू, उनके परिवार और समाज के लोग इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। विवाह के इस आयोजन ने यह साबित किया कि शादी जैसे महत्वपूर्ण संस्कार को बिना फिजूलखर्ची और दिखावे के भी गरिमा और सम्मान के साथ संपन्न किया जा सकता है। सामूहिक विवाह की यह परंपरा उन परिवारों के लिए वरदान बनकर सामने आई है, जो आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण अपनी बेटियों की शादी को लेकर चिंतित रहते हैं।

कोली समाज, जो गुजरात में बड़ी संख्या में निवास करता है, पारंपरिक रूप से खेती, मछली पालन और मेहनत-मजदूरी से जुड़ा रहा है। आर्थिक सीमाओं के बावजूद इस समाज ने अपनी मेहनत और संघर्ष से अपनी पहचान बनाई है। हालांकि, शादी-ब्याह में होने वाले अत्यधिक खर्च ने कई परिवारों को आर्थिक संकट में डाल दिया है। कई बार परिवारों को अपनी जमीन बेचनी पड़ती है या गहने गिरवी रखने पड़ते हैं, जिससे उनका भविष्य असुरक्षित हो जाता है। ऐसे में सामूहिक विवाह जैसे आयोजन न केवल आर्थिक राहत प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक सम्मान भी सुनिश्चित करते हैं।

अपने संबोधन में अरविंद केजरीवाल ने समाज में फैली कुरीतियों और दिखावे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि शादी जैसे पवित्र संस्कार को दिखावे और प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं बनाना चाहिए। उन्होंने समाज से अपील की कि वे सादगी और संस्कार को प्राथमिकता दें और अनावश्यक खर्च से बचें। उन्होंने यह भी कहा कि जब समाज अपने संसाधनों का सही उपयोग करता है, तो वह शिक्षा, स्वास्थ्य और बच्चों के भविष्य में अधिक निवेश कर सकता है।

उन्होंने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों और दो संस्कृतियों का मिलन होता है। यह एक जिम्मेदारी और विश्वास का बंधन है, जिसे प्रेम, सम्मान और समझदारी से निभाना चाहिए। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने जीवन में सादगी और नैतिक मूल्यों को अपनाएं और समाज के विकास में योगदान दें।

इस आयोजन की एक विशेष बात यह भी रही कि इसमें हर जाति और हर धर्म के जोड़ों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम सामाजिक समरसता और एकता का प्रतीक बनकर उभरा। इसने यह संदेश दिया कि समाज की प्रगति के लिए जाति, धर्म और वर्ग से ऊपर उठकर एकजुट होना आवश्यक है। सामूहिक विवाह जैसे आयोजन सामाजिक भेदभाव को कम करने और समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस अवसर पर भगवंत मान ने भी अपने विचार साझा करते हुए कहा कि समाज में बदलाव तभी संभव है जब लोग स्वयं आगे आकर सकारात्मक पहल करें। उन्होंने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम समाज को नई सोच और नई दिशा देने का कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन न केवल आर्थिक बोझ को कम करते हैं, बल्कि समाज में भाईचारे और सहयोग की भावना को भी मजबूत करते हैं। यह आयोजन राजनीतिक मंच से अधिक एक सामाजिक मंच के रूप में सामने आया, जहां नेताओं ने राजनीति से ऊपर उठकर समाज के हित की बात की। इससे लोगों के मन में यह विश्वास मजबूत हुआ कि जनप्रतिनिधि केवल शासन करने के लिए नहीं, बल्कि समाज के विकास और कल्याण के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। सामूहिक विवाह जैसे आयोजन समाज में सकारात्मक बदलाव का संकेत देते हैं। वे यह साबित करते हैं कि यदि समाज एकजुट होकर प्रयास करे, तो वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोज सकता है। यह आयोजन केवल विवाह का समारोह नहीं था, बल्कि यह एक आंदोलन था—एक ऐसा आंदोलन, जो समाज को दिखावे, कर्ज और कुरीतियों से मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

भावनगर का यह आयोजन आने वाले समय में अन्य समाजों और क्षेत्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। यह संदेश स्पष्ट है कि सादगी, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी के माध्यम से समाज को मजबूत और समृद्ध बनाया जा सकता है। यह केवल एक दिन का आयोजन नहीं, बल्कि एक नई सोच की शुरुआत है, जो समाज को बेहतर भविष्य की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती साख: गुजरात और वेस्ट मिडलैंड्स की मुलाकात ने खोले सहयोग के नए द्वार

जीएनएस)। गांधीनगर में हाल ही में हुई एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक और आर्थिक मुलाकात ने भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच बढ़ते सहयोग और विश्वास को नई मजबूती दी है। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने इंग्लैंड की वेस्ट मिडलैंड्स कंबाइंड अथॉरिटी के मेयर रिचर्ड पार्कर और उनके उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का गांधीनगर में स्वागत किया। यह दौरा कई मायनों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत और यूके के बीच मजबूत होते व्यापारिक और रणनीतिक संबंधों का एक जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया है। यूके-इंडिया ट्रेड डील के बाद वेस्ट मिडलैंड्स का यह पहला प्रतिनिधिमंडल दौरा था, जिसने सहयोग के नए आयामों को तलाशने का अवसर प्रदान किया।

इस बैठक के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं पर गंभीर और सकारात्मक चर्चा हुई। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने उच्च शिक्षा, हरित अर्थव्यवस्था, इलेक्ट्रिक वाहन तकनीक, कौशल विकास, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत विनिर्माण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में साझेदारी की गहरी रुचि व्यक्त की। यह केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य तकनीकी आदान-प्रदान, ज्ञान साझेदारी और भविष्य की जरूरतों के अनुसार संयुक्त विकास की रणनीति तैयार करना भी था। इस तरह की पहल भारत को वैश्विक तकनीकी और औद्योगिक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया के देशों के लिए एक भरोसेमंद मित्र के रूप में उभरा है। उन्होंने बताया कि भारत की विदेश नीति, आर्थिक सुधारों और विकास केंद्रित दृष्टिकोण ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत की साख को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि गुजरात ने इस वैश्विक विश्वास का भरपूर लाभ उठाया है और निवेश तथा औद्योगिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

मुख्यमंत्री ने 2003 में शुरू हुए वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पहल ने गुजरात को एक वैश्विक निवेश केंद्र के रूप में स्थापित किया है। इस सम्मेलन ने दुनिया भर के निवेशकों को गुजरात की ओर आकर्षित किया और राज्य को एक नीति-आधारित, निवेश-अनुकूल और विकासोन्मुखी राज्य के रूप में पहचान दिलाई। उन्होंने बताया कि गुजरात सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष नीतियां बनाकर औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया है।

इस बैठक का एक और महत्वपूर्ण पहलू 2030 में गुजरात में प्रस्तावित कॉमनवेल्थ गेम्स को लेकर चर्चा थी। इस अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन के लिए आवश्यक खेल बुनियादी ढांचे और खेल पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में यूके की विशेषज्ञता का लाभ उठाने पर विचार किया गया। वेस्ट मिडलैंड्स प्रतिनिधिमंडल ने इस दिशा में सहयोग करने की इच्छा व्यक्त की और गुजरात के प्रतिनिधियों को वेस्ट मिडलैंड्स आने का निमंत्रण भी दिया। यह सहयोग न केवल खेल क्षेत्र के विकास में सहायक होगा, बल्कि पर्यटन, रोजगार और अंतरराष्ट्रीय पहचान को भी बढ़ावा देगा।

मुख्यमंत्री ने गुजरात के भविष्य के विकास दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला और कहा कि राज्य प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। उन्होंने विशेष रूप से हरित विकास, नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और डिजिटल तकनीक जैसे उभरते क्षेत्रों में गुजरात की संभावनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से गुजरात इन क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व हासिल कर सकता है।

प्रतिनिधिमंडल में विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों और कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे, जिनमें वेस्ट मिडलैंड ग्रोथ कंपनी के सीईओ, ऊर्जा क्षेत्र के विशेषज्ञ, विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी और वैश्विक व्यापार संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे। इन सभी ने गुजरात के साथ साझेदारी को लेकर उत्साह व्यक्त किया और राज्य की औद्योगिक और तकनीकी क्षमता की सराहना की।

मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को आगामी वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय शिखर सम्मेलन और 2027 में आयोजित होने वाले वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। यह निमंत्रण इस बात का संकेत है कि गुजरात अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और अधिक मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है और वैश्विक निवेशकों के लिए नए अवसर प्रदान करने के लिए तैयार है। यह मुलाकात केवल एक औपचारिक कूटनीतिक बैठक नहीं थी, बल्कि यह भारत और यूके के बीच मजबूत होते विश्वास, साझेदारी और साझा विकास की भावना का प्रतीक थी। इसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत आज वैश्विक मंच पर एक विश्वसनीय, सक्षम और दूरदर्शी राष्ट्र के रूप में स्थापित हो चुका है। गुजरात, इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभर रहा है और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से अपने विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए तैयार है। आने वाले वर्षों में इस तरह के सहयोग भारत की आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता और वैश्विक नेतृत्व को और अधिक मजबूत करेंगे।

अक्षर बस्ती में एकता और सांस्कृतिक चेतना का महापर्व: सूरत में 20 सोसायटियों के विशाल हिंदू सम्मेलन ने रचा इतिहास

जीएनएस)। सूरत की अक्षर बस्ती में आयोजित विशाल हिंदू सम्मेलन ने सामाजिक एकता, सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्रभक्ति की ऐसी मिसाल पेश की, जिसने पूरे क्षेत्र को एक नए उत्साह से भर दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में अक्षर बस्ती की 20 सोसायटियों ने मिलकर जिस सामूहिक शक्ति और संगठन का प्रदर्शन किया, वह अपने आप में उल्लेखनीय था। यह आयोजन केवल एक धार्मिक सम्मेलन नहीं, बल्कि समाज को संगठित करने, सनातन मूल्यों के संरक्षण और आपसी सद्भाव को सुदृढ़ करने का एक सशक्त प्रयास था। कार्यक्रम की शुरुआत एक आकर्षक और अनुशासित शोभायात्रा से हुई, जिसमें लगभग 2000 स्त्री-पुरुषों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शोभायात्रा ने पूरे क्षेत्र में धार्मिक आस्था और राष्ट्रभक्ति का अद्भुत वातावरण बना दिया। अक्षर टाउनशिप स्थित श्री सर्वेश्वर मंदिर प्रांगण से प्रारंभ हुई यह यात्रा विभिन्न सोसायटियों के मुख्य मार्गों से होती हुई संकेत टेक्सटाइल मार्केट स्थित मुख्य कार्यक्रम स्थल तक पहुंची। रास्ते भर समाज के लोगों ने पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया, जिससे वातावरण और भी भावपूर्ण हो गया।

यात्रा के दौरान प्रस्तुत की गई धार्मिक झांकियों ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं की समृद्ध विरासत को जीवंत कर दिया। राजस्थानी लोकनृत्य 'गैर' की प्रस्तुति ने रंगों और ताल की ऐसी छटा बिखेरी कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। देशभक्ति गीतों की स्वर लहरियों ने वातावरण में राष्ट्रप्रेम की भावना को और प्रगाढ़ कर दिया। शोभायात्रा में शामिल लोगों के हाथों में भगवा ध्वज और उनके जयघोषों ने पूरे क्षेत्र को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा से भर दिया।

सम्मेलन के संरक्षक शंकरलाल भूतड़ा और मुख्य संयोजक मुरली प्रजापत के नेतृत्व में इस आयोजन की योजना बनाई गई थी। उनकी दूरदर्शिता और संगठन क्षमता के कारण यह कार्यक्रम अत्यंत सुव्यवस्थित और सफल रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में निर्मल जैन की उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा को और बढ़ाया। मंच से उन्होंने समाज की एकता और सांस्कृतिक चेतना के महत्व पर प्रकाश डाला।

सभा को संबोधित करते हुए श्री श्री 1008 महंत स्वामी श्री तीर्थगिरी जी महाराज ने कहा कि समाज की शक्ति उसकी एकता में निहित है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे सनातन धर्म के मूल्यों को अपनाते हुए समाज को संगठित रखें और नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ें। जैन मुनि श्री शाश्वत मुनि जी म.सा. और नवदीक्षित श्री शुचित मुनि जी म.सा. ने भी अपने उद्बोधन में सद्भाव, संयम और नैतिकता के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि समाज तभी प्रगति कर सकता है, जब उसके सदस्य आपसी मतभेदों को भुलाकर एक साथ आगे बढ़ें।

कार्यक्रम का संचालन सहसंयोजक सत्यनारायण कपूरिया ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया। उनके संयमित और स्पष्ट संचालन ने कार्यक्रम को निरंतरता और ऊर्जा प्रदान की। मंच से दिए गए संदेशों ने उपस्थित जनसमूह के मन में नई प्रेरणा का संचार किया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में महिलाओं और युवाओं की भागीदारी ने यह स्पष्ट किया कि समाज की नई पीढ़ी भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने के लिए तत्पर है।

समापन अवसर पर आयोजित भोजन प्रसादी में बड़ी संख्या में परिवारों ने भाग लिया। यह केवल भोजन का आयोजन नहीं था, बल्कि सामाजिक समरसता और भाईचारे का प्रतीक था। विभिन्न सोसायटियों के लोग एक साथ बैठकर प्रसादी ग्रहण कर रहे थे, जिससे सामाजिक एकता की भावना और भी सुदृढ़ हुई। इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि जब समाज एक मंच पर आता है, तो वह अपनी सामूहिक शक्ति का प्रभावी प्रदर्शन कर सकता है।

आयोजन की सफलता में दीपचंद चौधरी, मोहनसिंह राजपुरोहित, सांवलसिंह राव और द्वारकाप्रसाद तापड़िया सहित अनेक कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा। उनकी अथक मेहनत और समर्पण के कारण यह सम्मेलन इतनी भव्यता और अनुशासन के साथ संपन्न हो सका। अंत में मुख्य संयोजक मुरली प्रजापत ने सभी उपस्थित जनों, संत-महात्माओं और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी इसी प्रकार समाज को संगठित रखने का संकल्प दोहराया।

कार्यक्रम का समापन "भारत माता की जय" के गगनभेदी जयघोष के साथ हुआ, जिसने पूरे वातावरण को राष्ट्रप्रेम और गर्व की भावना से भर दिया। यह सम्मेलन केवल एक दिन का आयोजन नहीं था, बल्कि यह समाज में सांस्कृतिक जागरण और संगठन की नई शुरुआत का प्रतीक बन गया। अक्षर बस्ती की 20 सोसायटियों द्वारा आयोजित यह विशाल हिंदू सम्मेलन आने वाले समय में अन्य क्षेत्रों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगा, जहां समाज अपनी परंपराओं और मूल्यों के संरक्षण के लिए एकजुट होकर कार्य करेगा।

मातृभाषा का गौरव और अटल की कविता से सजी संवेदनाओं की संध्या

जीएनएस)। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती, बल्कि वह मनुष्य की आत्मा, उसकी संस्कृति, उसकी पहचान और उसके अस्तित्व का जीवंत प्रतीक होती है। जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा में बोलता है, लिखता है या अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है, तब वह केवल संवाद नहीं करता, बल्कि अपने भीतर के पूरे संसार को अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि मातृभाषा का सम्मान करना अपने अस्तित्व और अपनी जड़ों का सम्मान करना है। इसी भाव को साकार करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक के सूरत मॉड्यूल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर "अटल काव्यांजलि" प्रतियोगिता का अत्यंत गरिमामय और प्रेरणादायी आयोजन किया गया, जिसने उपस्थित सभी लोगों के हृदय को भावनाओं और गर्व से भर दिया। यह आयोजन केवल एक प्रतियोगिता नहीं था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक उत्सव था, जिसमें भाषा, साहित्य, संवेदनशीलता और राष्ट्रप्रेम का अद्भुत संगम देखने को मिला। सूरत जैसे जीवंत और बहुभाषी शहर में आयोजित यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण था कि आधुनिकता और तकनीकी युग के बीच भी लोग अपनी मातृभाषा से गहराई से जुड़े हुए हैं। कार्यक्रम में विभिन्न बैंकों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया और अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मा की आवाज होती है।

इस आयोजन की विशेषता यह थी कि यह भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और महान कवि अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। अटल जी केवल एक राजनेता नहीं थे, बल्कि वे एक संवेदनशील कवि, एक गहन चिंतक और एक महान व्यक्तित्व थे, जिनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, मानवीय संवेदना, संघर्ष, आशा और आत्मबल का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उनकी कविताएं केवल शब्द नहीं थीं, बल्कि वे जीवन का दर्शन थीं, जो हर व्यक्ति को प्रेरणा देती हैं। जब प्रतिभागियों ने अटल जी की कविताओं का पाठ किया, तो ऐसा लगा मानो स्वयं अटल जी की आवाज उस वातावरण में गूंज रही हो।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों ने जिस भावपूर्ण और प्रभावशाली तरीके से अटल जी की कविताओं का पाठ किया, उसने वहां उपस्थित हर व्यक्ति के मन को छू लिया। उनकी आवाज में केवल शब्द नहीं थे, बल्कि भावनाओं की गहराई, संवेदनाओं की सच्चाई और राष्ट्र के प्रति प्रेम की पवित्रता थी। यह दृश्य यह दर्शा रहा था कि भाषा और साहित्य का प्रभाव समय की सीमाओं से परे होता है। अटल जी की कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी वे उनके जीवनकाल में थीं।

इस आयोजन की अध्यक्षता एसबीआई के सहायक महाप्रबंधक हरीश जैन ने की, जिन्होंने अपने संबोधन में मातृभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मातृभाषा हमारे व्यक्तित्व की आधारशिला होती है। हम चाहे कितनी भी विदेशी भाषाएं सीख लें, लेकिन जो आत्मीयता, सहजता और गहराई मातृभाषा में होती है, वह किसी अन्य भाषा में संभव नहीं होती। मातृभाषा हमें हमारी संस्कृति से जोड़ती है, हमारे विचारों को दिशा देती है और हमें हमारी पहचान का बोध कराती है।

कार्यक्रम में विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना दिया। पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ़ इंडिया और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और इस आयोजन के माध्यम से मातृभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त किया। यह इस बात का प्रतीक था कि बैंकिंग जैसे अत्यधिक व्यावसायिक और तकनीकी क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हुए हैं और भाषा के महत्व को समझते हैं।

जब प्रतिभागियों ने अटल जी की कविताओं का पाठ किया, तो वहां उपस्थित हर व्यक्ति के मन में गर्व और भावनाओं की लहर दौड़ गई। उनकी कविताओं में जो राष्ट्रप्रेम था, वह हर श्रोता के हृदय में देश के प्रति प्रेम की भावना को जागृत कर रहा था। उनकी कविताओं में जो आशावाद था, वह हर व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा था। उनकी कविताओं में जो संवेदनशीलता थी, वह हर व्यक्ति को मानवीय मूल्यों का महत्व समझा रही थी। यह आयोजन इस बात का भी प्रमाण था कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह समाज को जोड़ने का एक सशक्त साधन होती है। भाषा के माध्यम से लोग एक-दूसरे के विचारों को समझते हैं, एक-दूसरे की भावनाओं को महसूस करते हैं और एक-दूसरे के साथ गहरा संबंध स्थापित करते हैं। मातृभाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी संस्कृति, अपने इतिहास और अपनी परंपराओं से जुड़ा रहता है।

आज के समय में जब वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के कारण विदेशी भाषाओं का प्रभाव बढ़ रहा है, तब मातृभाषा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

संयम, साधना और समाज सेवा का संगम बना गच्छाधिपति पदप्रधान समारोह

जीएनएस)। सूरत की पावन धरती एक बार फिर आध्यात्मिक उल्लास और भक्ति भावना से सराबोर हो उठी, जब वेसु स्थित बलार फार्म में आचार्य भगवंत विजय यशोवर्मा सूरीश्वरजी महाराज के गच्छाधिपति पदप्रधान समारोह का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। यह अवसर केवल जैन समाज के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे समाज के लिए आस्था, परंपरा और आध्यात्मिक चेतना का उत्सव बन गया। समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज कर नव-नियुक्त गच्छाधिपति का यशतिलक किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके साथ गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी तथा केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल की प्रेरणादायी उपस्थिति ने समारोह की गरिमा को और अधिक ऊंचाई प्रदान की। यह समारोह केवल एक धार्मिक परंपरा का निर्वहन नहीं था, बल्कि वह दशकों की तपस्या, साधना और समाज सेवा की औपचारिक मान्यता का पावन क्षण था। आचार्य विजय यशोवर्मा सूरीश्वरजी ने अपने 63 वर्षों के दीक्षा जीवन में संयम, त्याग और आध्यात्मिक जागरण का जो दीप प्रज्वलित किया, वह आज असंख्य लोगों के जीवन को आलोकित कर रहा है। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में इस दीर्घ साधना यात्रा को समस्त मानव समाज के लिए प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक जीवन में अनेक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलता है, किंतु कुछ अवसर ऐसे होते हैं जो आत्मा को विशेष आनंद और शांति प्रदान करते हैं, और यह समारोह उन्हीं दुर्लभ अवसरों में से एक है।

मुख्यमंत्री ने वर्ष 1965 में अल्पायु में दीक्षा ग्रहण करने के आचार्य के संकल्प को स्मरण करते हुए कहा कि इतनी कम आयु में सांसारिक मोह-माया का त्याग कर धर्म और साधना का मार्ग अपनाना असाधारण साहस और आत्मबल का परिचायक है। उन्होंने देशभर में किए गए आचार्यश्री के आध्यात्मिक प्रवासों, समाज सेवा और समाज सुधार के कार्यों की सराहना की। विशेष रूप से बच्चों, युवाओं और परिवारों के लिए आयोजित शिविरों और संस्कार कार्यक्रमों को उन्होंने सामाजिक जागरूकता और चरित्र निर्माण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। उनके अनुसार ऐसे प्रयास केवल धार्मिक क्रियाकलाप नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला हैं।

मुख्यमंत्री ने अपने उद्बोधन में यह भी कहा कि आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य सुख की खोज में निरंतर दौड़ रहा है, किंतु इस दौड़ में वह वास्तविक आनंद से दूर होता जा रहा है। उन्होंने संयमित जीवनशैली और संतत्वपूर्ण आचरण को सच्चे और स्थायी सुख का मार्ग बताया। उनका यह संदेश समारोह में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं के लिए जीवन दर्शन का सूत्र बन गया। उन्होंने सभी नागरिकों से आह्वान किया कि वे धर्म से जुड़े रहें और जीवन में शांति तथा दुर्लभ आनंद की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग को अपनाएं।

उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने अपने वक्तव्य में सूरत की आध्यात्मिक परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भूमि सदैव संतों और आचार्यों की तपोभूमि रही है। उन्होंने जैनाचार्य अभयदेवसूरी और विजय यशोवर्मा सूरीश्वरजी के मार्गदर्शन को हजारों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बताया। उनके अनुसार इन आचार्यों ने केवल जैन समाज का ही नहीं, बल्कि अन्य समुदायों का भी मार्गदर्शन कर सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ किया है। उनका यह कथन इस बात का प्रमाण था कि संतों का प्रभाव किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह व्यापक समाज को दिशा देता है।

समारोह के दौरान मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री ने नव-गच्छाधिपति के भाल पर विजय तिलक लगाकर शुभकामनाएं अर्पित कीं। मंत्रोच्चार और पारंपरिक विधि-विधान के बीच पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरिजी महाराज की आज्ञा से नए गच्छाधिपति को औपचारिक रूप से पदवी प्रदान की गई। वह क्षण अत्यंत भावनात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण था। श्रद्धालुओं की आंखों में श्रद्धा और हृदय में आनंद स्पष्ट रूप से झलक रहा था।

इस अवसर पर आचार्य यशोवर्मा सूरीश्वरजी के जीवन पर आधारित पुस्तक 'श्रद्धेय गुरुदेवश्री' का भी विमोचन किया गया। यह पुस्तक केवल एक जीवनी नहीं, बल्कि एक तपस्वी जीवन की प्रेरणादायी यात्रा का दस्तावेज है। इसमें उनके दीक्षा जीवन, आध्यात्मिक साधना, समाज सेवा और मानवता के प्रति समर्पण का विस्तार से वर्णन किया गया है। पुस्तक का विमोचन समारोह को एक साहित्यिक और वैचारिक आयाम प्रदान कर गया।

कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार के मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा, विधायक मनुभाई पटेल, संदीपभाई देसाई, संगीताबेन पाटिल, मेयर दक्षेश मावानी, जिला कलेक्टर सौरभ पारधी, म्युनिसिपल कमिश्नर एम. नागराजन, पुलिस कमिश्नर अनुपम सिंह गहलोत, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन राजन पटेल तथा शहर संगठन अध्यक्ष परेश पटेल सहित अनेक जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति ने समारोह को व्यापक सामाजिक स्वरूप प्रदान किया। जैन साधु-संतों और बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बनकर इसे अविस्मरणीय बना दिया। समारोह के दौरान वातावरण में भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक उल्लास की अद्भुत अनुभूति थी। मंच पर विराजमान संतों की शांत और तेजस्वी उपस्थिति तथा श्रद्धालुओं की भावपूर्ण सहभागिता ने पूरे परिसर को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। यह दृश्य इस बात का प्रतीक था कि आधुनिक जीवन की व्यस्तता और चुनौतियों के बीच भी समाज अपनी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ा हुआ है।